बीओआई

वार्ता

बैंक ऑफ़ इंडिया की तिमाही हिन्दी गृहपत्रिका
मार्च, 2025

बैंक ऑफ़ इंडिया

रिश्तों की जमापूँजी

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण

06 मार्च 2025 को संसदीय राजभाषा समिति द्वारा जयपुर आंचलिक कार्यालय का निरीक्षण किया गया।

'बीओआई वार्ता' के दिसंबर 2024अंक का विमोचन

बीओआई वार्ता के दिसंबर 2024 अंक का विमोचन माननीय प्रबंध निदेशक एवं सीईओ श्री रजनीश कर्नाटक द्वारा सभी वरिष्ठ कार्यपालकों की उपस्थिति में किया गया।

मुख्य संरक्षक

श्री रजनीश कर्नाटक

प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

संरक्षक

श्री राजीव मिश्रा

कार्यपालक निदेशक

मार्गदर्शक

श्री अभिजीत बोस

मुख्य महाप्रबंधक

प्रधान संपादक

श्री बिश्वजित मिश्र

महाप्रबंधक

उप प्रधान संपादक

सुश्री मऊ मैत्रा

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री अमरीश कुमार, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

श्री राजेश यादव, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

श्री सचिन यादव, प्रबंधक (राजभाषा)

श्री परवेश कुंडू, प्रबंधक (राजभाषा)

श्री दिव्यांश मिश्र, अधिकारी (राजभाषा)

यह आवश्यक नहीं कि पत्रिका में छपे लेखों में व्यक्त विचार बैंक के हों।

प्रधान संपादक,
बैंक ऑफ़ इंडिया, प्रधान कार्यालय,
राजभाषा विभाग, स्टार हाउस, जी-5, जी ब्लॉक,
बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व)
मुंबई - 400 051

विषय-सूची

अपने विभाग को जानिए :
संव्यवहार निगरानी एवं केवाईसी/एएमएल विभाग 08

राष्ट्र निर्माण में नारी की भूमिका - अतीत, वर्तमान और भविष्य 11

मन के विकारों की औषधि - ध्यान 14

पौराणिक एवं ऐतिहासिक नगरी बिठूर 16

बदलता युग - बदलते रिश्ते 18

"महाराष्ट्र की प्रभावशाली महिलाएं" 20

विश्व कविता दिवस 22

भारतीय विरासत :
यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल 24

"नववर्ष मनाने की भारतीय परम्पराएँ" 27

एक यात्रा ऐसी भी... 30

पुस्तक समीक्षा - 'टोकरी में दिगन्त: थेरीगाथा' 32

चित्र काव्य प्रतियोगिता 34

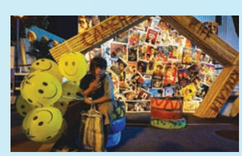

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

मुझे खुशी है कि 'बीओआई वार्ता' का मार्च 2025 तिमाही का यह अंक 'समाज में महिलाओं के योगदान' को समर्पित है। स्टार परिवार की सभी महिला स्टाफ सदस्य महत्वपूर्ण मानव संसाधन के तौर पर बैंक के कारोबार की प्रगति में अहम भूमिका निभा रही हैं। भारत सरकार द्वारा लागू ईज़ फ्रेमवर्क के तहत महिलाएं बैंकों में नेतृत्व भूमिकाओं में आगे आ रही हैं। बैंक ऑफ़ इंडिया में महिला स्टाफ सदस्यों के लिए विशेष प्रशिक्षण, मेंटरशिप और कौशल विकास कार्यक्रमों का निरंतर आयोजन किया जाता है। बैंक में महिला स्टाफ सदस्यों को कामकाजी एवं पारिवारिक जीवन में संतुलन बनाए रखने के लिए मातृत्व अवकाश, शिशु देखरेख भत्ता, मेडिकल जांच आदि उपलब्ध कराए जाते हैं।

वर्तमान समय में बैंकिंग के तीव्र परिवर्तनशील परिवेश में सीखने की क्षमता एवं कौशल को निरंतर बनाए रखना बहुत महत्वपूर्ण है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक का कार्मिक होने के नाते हमें देश के अलग-अलग क्षेत्रों में कार्य करने का अवसर मिलता है। इसलिए हम जहां भी कार्यरत हैं, वहाँ की संस्कृति, भाषा एवं ग्राहक अपेक्षाओं के अनुरूप स्वयं को लगातार अपग्रेड करना हमारा दायित्व है। ग्राहक के साथ संव्यवहार के दौरान यथासंभव साधारण एवं स्थानीय भाषा का उपयोग करें। शाखा एवं कार्यालय में स्थानीय वातावरण का एहसास ग्राहक के भरोसे को अर्जित करने में सहायक होता है। बैंकिंग सेवाओं की विविधता हाई नेटवर्थ व्यवसायी से लेकर श्रमिक वर्ग तक विस्तारित है। इसलिए हमें देश के प्रत्येक वर्ग की अपेक्षाओं के अनुरूप बैंकिंग सेवाओं की जानकारी होना अपेक्षित है। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार हम दैनिक कामकाज में भारतीय भाषाओं के प्रगामी प्रयोग में निरंतर वृद्धि करने हेतु प्रयासरत हैं। ग्राहकों की सुविधा के लिए हमारे डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर अनेक भारतीय भाषाओं में बैंक की सेवाएँ उपलब्ध करवाई जा रही हैं। हमारी सभी महिला स्टाफ सदस्य 'बीओआई वार्ता' का यह अंक जरूर पढ़ें और प्रभावशाली बैंकर के रूप में अपने उज्जवल भविष्य की ओर कदम बढ़ाएं।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

(रजनीश कर्नाटक)

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

यह बड़ी खुशी की बात है कि "बीओआई वार्ता" का यह अंक महिलाओं को समर्पित है। वित्तीय वर्ष 2024-25 की अंतिम तिमाही में हम सभी अनेक महत्वपूर्ण दिवसों के आयोजन के साक्षी रहे हैं। हम सभी ने 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस, 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस और 8 मार्च को अंतराष्ट्रीय महिला दिवस बड़े धूमधाम से मनाया। विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर हमारे सभी कार्यालयों में अनेक प्रतियोगिताएं व कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। पत्रिका में 'विश्व कविता दिवस' को समर्पित पृष्ठों को पढ़कर मुझे खुशी हुई। 21 मार्च को अंतराष्ट्रीय वन दिवस, ग्लेशियर दिवस के साथ-साथ 'विश्व कविता दिवस' भी मनाया जाता है। ये सभी अंतराष्ट्रीय दिवस हमें साझा रूप में संबंधित विषय से जुड़ने, जागरूक करने और संसार में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमारा बैंक दुनियाभर में लोगों को बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध करवाता है। बैंकिंग जनसाधारण से गहराई से जुड़ा हुआ विषय है, इसलिए सभी दिवसों के आयोजन का महत्व हमारे लिए बहुत बढ़ जाता है। जब हम शाखाओं व कार्यालयों में ऐसे आयोजन करते हैं तो ग्राहक भी उसी साझी भावना के तहत हमसे मनोवैज्ञानिक जुड़ाव का अनुभव करता है, तथा इससे बैंक ऑफ़ इंडिया ब्रांड को मजबूती मिलती है।

हाल ही में हमने नए वित्तीय वर्ष में प्रवेश किया है। पिछले वित्तीय वर्ष के अनंतिम आंकड़ों के अनुसार बैंक ने कारोबार वृद्धि के मामले में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन किया है। इस उपलब्धि के लिए सभी स्टाफ सदस्यों के प्रयास प्रशंसनीय हैं। नए वित्तीय वर्ष के दौरान हमें कारोबार में समावेशी वृद्धि सुनिश्चित करते हुए और अधिक गति से आगे बढ़ना है। इस वर्ष पदोन्नत होने वाले सभी स्टाफ सदस्यों को मैं बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आप नए रोल में बेहतर कार्यनिष्पादन करके बैंक के कारोबार के लक्ष्यों को प्राप्त करेंगे। परिवर्तन एक नई ऊर्जा का संचार करता है। मुझे विश्वास है कि आप स्थानांतरण के पश्चात नए स्थान पर, नई ऊर्जा के साथ बेहतर कार्यनिष्पादन हेतु प्रयास करेंगे।

'बीओआई वार्ता' के इस नवीनतम अंक में महिलाओं से संबंधित विषयों सहित विविध विषयों पर लेखों को प्रकाशित किया गया है। मैं संपादक मंडल को नवोन्मेषी संपादन के लिए बधाई देता हूँ और इस अंक में शामिल रचनाओं को लिखने वाले स्टाफ सदस्यों के प्रयासों की सराहना करता हूँ। आप सभी को गुड़ी पडवा, ईद, राम नवमी, गुड फ्राइडे आदि त्योहारों के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय,

(राजीव मिश्रा)

मुख्य महाप्रबंधक की कलम से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिन्दी गृह पत्रिका “बीओआई वार्ता” के मार्च 2025 अंक के प्रकाशन के लिए संपादकीय टीम को शुभकामनाएँ! बैंक की हिन्दी गृहपत्रिका के रूप में ‘बीओआई वार्ता’ बैंक के स्टाफ सदस्यों के लिए अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण मंच है। इस अंक में ‘महिला सशक्तिकरण’ जैसे समसामयिक विषय पर हमारे प्रतिभाशाली स्टाफ सदस्यों ने स्तरीय लेख एवं कविताएं लिखी हैं। बैंक का कामकाज सामाजिक-आर्थिक परिवेश से बहुत गहराई से जुड़ा हुआ है। उदाहरण के लिए समाज में महिला सशक्तिकरण का सबसे अधिक लाभ बैंकिंग क्षेत्र को होना तय है, क्योंकि महिलाएं आर्थिक दृष्टि से पुरुषों से अधिक अनुशासित होती हैं। महिलाओं में भविष्य की सुरक्षा के लिए बचत करने की भावना प्रबल होती है। उद्यमी के रूप में महिलाएं अधिक कुशलता से वित्तीय संसाधनों का उपयोग कर पाने में सक्षम हैं। हमारा बैंक समाज में ग्राहकों से लेकर स्टाफ सदस्यों तक महिलाओं के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध है। आज के समय में महिलाएं सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं, लेकिन हमेशा से स्थिति ऐसी नहीं थी। वोट डालने से लेकर ड्राइविंग करने जैसे आधारभूत अधिकारों के लिए उन्हें बहुत संघर्ष करना पड़ा है। आज कानूनी रूप से महिलाएं भले सशक्त हैं लेकिन ‘बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ’ जैसी योजनाओं के जरिए निरंतर जागरूकता तब तक जरूरी है जब तक महिलाएं पढ़-लिख कर देश के आर्थिक विकास में सहभागिता करते हुए सामाजिक रूप से पूर्णतः सशक्त नहीं हो जाती।

बीओआई वार्ता के इस अंक में लेख, कहानी, कविताएँ, पुस्तक समीक्षा आदि साहित्यिक सामग्री पठनीय है। मैं स्टार परिवार के सभी सदस्यों को पिछले वित्तीय वर्ष की सफल समाप्ति एवं नए वित्तीय वर्ष की शुभ शुरुआत की शुभकामनाएं देते हुए भविष्य में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु अपेक्षित परिश्रम करने का आग्रह करता हूँ।

शुभकामाओं सहित,

भवदीय,

(अभिजीत बोस)
मुख्य महाप्रबंधक

प्रधान संपादक की कलम से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिन्दी गृह पत्रिका “बीओआई वार्ता” का मार्च 2025 अंक पाठकों को सौंपते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। जनवरी से मार्च तिमाही में 08 मार्च को आयोजित ‘अंतराष्ट्रीय महिला दिवस’ को ध्यान में रखते हुए इस अंक में महिलाओं से संबंधित रचनाओं को हमने वरीयता दी है। आज के युग में पारंपरिक बाधाओं को तोड़कर महिलाएं सफलता की नई परिभाषाएँ गढ़ रही हैं। महिला सशक्तिकरण अब केवल नारा नहीं रह गया है अपितु वास्तविकता के धरातल पर आज महिलाएं शिक्षा, उद्यम, विज्ञान, चिकित्सा, कारोबार सभी क्षेत्रों में नए कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं। महिलाओं की सफलता की हर कहानी, चाहे छोटी हो या बड़ी, समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण है। एक ओर जहां व्यक्तिगत सफलताएँ प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने की भूमिका निभाती है वहीं दूसरी ओर ‘स्वयं सहायता समूह’ जैसे सामूहिक प्रयास हाशिये पर खड़े लोगों के लिए चमत्कार से कम नहीं हैं। इसलिए ‘अंतराष्ट्रीय महिला दिवस’ जैसे आयोजन इन उपलब्धियों का जश्न मनाने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं।

इस अंक में भावी पीढ़ियों का पथ प्रदर्शन करने वाली नायिकाओं और निडरता से सामाजिक बदलाव को गति देने वाली महिलाओं से संबंधित लेखों एवं कहानियों को समाहित किया गया है। ‘एक यात्रा ऐसी भी...’ लेख में सुश्री हेना परवेज़ ने ‘सुनीता विलियम्स’ की अंतरिक्ष यात्राओं की साहसिक गाथा का वर्णन किया है, सुश्री जिम्मी ने ‘राष्ट्र निर्माण में नारी की भूमिका’ बताई है तो सुश्री अंकिता दुबे के लेख में ‘महाराष्ट्र की प्रभावशाली महिलाओं’ का उल्लेख है। पिछले अंक की चित्र काव्य प्रतियोगिता के लिए भी अनेक प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई। पत्रिका में कविताएँ, पुस्तक समीक्षा एवं भारतीय विरासत सरीखे स्थायी स्तंभो में पाठकों के लिए उपयोगी एवं पठनीय सामग्री का प्रकाशन किया गया है। नए वित्तीय वर्ष की प्रथम तिमाही में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए, मैं सभी स्टाफ सदस्यों से ‘बीओआई वार्ता’ का यह अंक पढ़ने के लिए आग्रह करता हूँ।

भवदीय,

(बिश्वजित मिश्र)
महाप्रबंधक

संव्यवहार निगरानी एवं केवाईसी/एएमएल विभाग

श्वेता
अधिकारी
संव्यवहार निगरानी एवं
केवाईसी ए.एम.एल. विभाग
प्रधान कार्यालय -मुंबई

केवाईसी एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो किसी भी वित्तीय संस्थान को अपने ग्राहकों की पहचान सुनिश्चित एवं सत्यापित करने में सहायता प्रदान करती है। केवाईसी एक ऐसी प्रक्रिया है जो किसी भी देश के वित्तीय तंत्र को मनी लॉन्ड्रिंग (धनशोधन) एवं अन्य अवैध वित्तीय गतिविधियों से बचाव में मदद करती है। साथ ही साथ आतंकवाद वित्तपोषण को रोकने और वित्तीय संस्थानों एवं उनके ग्राहकों को धोखाधड़ी और अन्य जोखिमों से बचाती है।

बैंकिंग की पुरानी व्यवस्था हो या नए-नए आयामों को प्राप्त करती बैंकिंग की वर्तमान व्यवस्था, "अपने ग्राहक को जानिए" सदा ही बैंकिंग व्यवस्था का आधार रहा है। लेनदेन यानि संव्यवहार इस व्यवस्था का दूसरा महत्वपूर्ण अंग है। अच्छा ग्राहक और सच्चा लेनदेन बैंकिंग व्यवस्था की रीढ़ है। अच्छे ग्राहक रूपी पर्वत से जब तक सच्चे लेनदेन की नदी प्रवाहित होती रहती है, किसी भी देश के वित्त रूपी मैदान में हरियाली की बहार छाई रहती है।

केवाईसी एक वृहत प्रक्रिया है जिसे कई चरणों में बांटकर समझा जा सकता है, जैसे -

1. ग्राहकों का चयन एवं सत्यापन: किसी भी वित्तीय संस्थान के लिए ग्राहकों का चयन और उसके उपरांत उनकी पहचान और उनके पते का सत्यापन केवाईसी प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है।

2. वित्तीय लेनदेन अथवा संव्यवहार निगरानी: वित्तीय संस्थान ग्राहकों के लेनदेन की निगरानी करते हैं जिससे किसी भी अवैध लेनदेन का पता लगाया जा सके एवं यह सुनिश्चित किया जा सके कि वित्तीय संस्थान/ वित्तीय तंत्र का इस्तेमाल किसी आपराधिक गतिविधि के लिए न हो।

3. ग्राहकों के जोखिम का मूल्यांकन: वित्तीय संस्थानों द्वारा अपने ग्राहकों के जोखिम स्तर का मूल्यांकन किया जाता है। मूल्यांकन के आधार पर उन्हें जोखिम श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है ताकि उनके वित्तीय लेनदेन/ संव्यवहार का समुचित आकलन किया जा सके।

4. संदिग्ध संव्यवहार/ गतिविधि रिपोर्टिंग: किसी संदिग्ध संव्यवहार अथवा गतिविधि का पता चलने पर वित्तीय संस्थानों द्वारा संबंधित अधिकारियों/संस्थानों को रिपोर्ट किया जाता है।

भारत में केवाईसी और एएमएल से संबंधित प्राथमिक कानूनी ढांचे का निर्माण धन शोधन निवारण अधिनियम, 2002 (पीएमएलए एक्ट-2002) के अंतर्गत किया गया। तदुपरान्त धन शोधन निवारण (अभिलेखों का रखरखाव) नियम, 2005 (पीएमएल एक्ट - 2005) के द्वारा 2002 के अधिनियम में कुछ संशोधन किये गए। हमारे देश में वित्तीय प्रणाली को इन्हीं अधिनियमों के द्वारा नियंत्रित किया जाता है। पीएमएल एक्ट का मुख्य उद्देश्य कुछ इस प्रकार है: धन-शोधन (मनी लॉन्ड्रिंग) को रोकना, अवैध गतिविधियों या/और आर्थिक अपराधों में धन के उपयोग की रोकथाम तथा धन-शोधन से प्राप्त या इसमें सम्मिलित संपत्ति को जब्त करने का प्रावधान।

संव्यवहार निगरानी एवं केवाईसी/एएमएल विभाग बैंक के प्रधान कार्यालय में महाप्रबंधक के नेतृत्व में संचालित है और इसका परिचालन मुंबई एवं लखनऊ इकाईयों द्वारा किया जाता है। आरबीआई की अनुशंसा (2021) के अनुपालनार्थ बैंक ने पीएमएल एक्ट के अंतर्गत एक स्वतंत्र प्रिन्सिपल अधिकारी (पीओ) के पद की स्थापना की, जिसका कार्य महाप्रबंधक रैंक के अधिकारी द्वारा

संचालित किया जाता है। लखनऊ इकाई लखनऊ में पदस्थापित सहायक महाप्रबंधक के नेतृत्व में काम करती है।

मुंबई इकाई द्वारा संचालित कार्यों का संक्षिप्त विवरण

1. आरबीआई के मास्टर डायरेक्शन को ध्यान में रखते हुए केवाईसी/ एएमएल/सीएफ़टी से संबंधित नीति का निर्माण करना और निश्चित समयावधि में उसका पुनरावलोकन (रिव्यू) करना।
2. आरबीआई एवं बैंक के दिशानिर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करना।
3. केवाईसी संबंधित समस्याओं के निराकरण हेतु बैंक के डेटाबेस का समय-समय पर परीक्षण (स्क्रूटिनी) करना।
4. केवाईसी और एएमएल संबंधित नियामकों (रेग्युलेटर) के अवलोकनों (ओब्ज़र्वेसन) पर विचार करना, निराकरण करना एवं संपादित कार्य के संबंध में रेग्युलेटर को अद्यतन रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
5. विभिन्न संबंधित रिपोर्ट्स यथा, एसटीआर, सीटीआर, सीसीआर, एनपीटीओआर एवं सीबीडब्लूटी का जेनेरेट करना एवं स्क्रूटिनी करना तथा समयबद्ध प्रेषण हेतु शाखाओं एवं आंचलिक कार्यालयों से उत्तर-प्राप्ति हेतु अनुवर्ती कार्रवाई करना।
6. आरबीआई के दिशानिर्देशों के अंतर्गत बैंक के ग्राहकों के जोखिम वर्गीकरण का अर्धवार्षिक पुनरावलोकन (रिव्यू) करना।
7. बैंक में अखिल भारतीय स्तर पर केवाईसी प्रक्रिया की औचक जांच करना।
8. बैंक कर्मचारियों के लिए समयानुसार प्रशिक्षण सुनिश्चित करना।

मुंबई इकाई द्वारा नियामक (रेग्युलेटर) संबंधी कुछ अन्य कार्यों का गंभीरता से फॉलोअप किया जाता है एवं कार्य-सम्पादन सुनिश्चित कराया जाता है, जैसे-

सी-केवाईसी- केंद्रीय केवाईसी भारत के प्रतिभूतिकरण और परिसंपत्ति पुनर्निर्माण और प्रतिभूति हित की केंद्रीय रजिस्ट्री (सीईआरएसएआई) द्वारा प्रबंधित प्लेटफ़ार्म पर काम करनेवाला केंद्रीयकृत केवाईसी सिस्टम है जो केवाईसी प्रक्रिया को सुचारु ढंग प्रदान करता है, साथ ही नियामकीय आवश्यकताओं का अनुपालन सुनिश्चित करता है। खाता खोलने या खातों में संशोधन के समय सी-केवाईसी आई डी का बनाना (जेनरेशन) अनिवार्य है।

रि-केवाईसी: ग्राहकों के जोखिम वर्गीकरण पर आधारित प्रक्रिया है। हमारे बैंक में ग्राहकों को तीन जोखिम- श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है- उच्च, मध्यम एवं निम्न जोखिम। उच्च, मध्यम एवं निम्न जोखिम वाले ग्राहकों के लिए रि-केवाईसी की अवधि क्रमश: 2, 8 एवं 10 वर्ष है।

दर्पण आईडी: नियामकीय (रेगुलेटरी) निर्देशों के अनुसार एनपीओ (गैर लाभकारी संगठन) का खाता खोलने के समय बैंकों को ये सुनिश्चित करना है कि नीति आयोग के दर्पण पोर्टल पर संगठन का पंजीकरण हो चुका है। यदि नहीं है तो बैंक को पंजीकरण की प्रक्रिया सम्पन्न करनी है।

एमएनआरएल (मोबाइल नंबर रिवोकेशन लिस्ट): भारत सरकार के दूरसंचार विभाग (डीओटी) ने एक सुरक्षित प्लैटफ़ार्म बनाया है जिसका उद्देश्य साइबर अपराध और वित्तीय धोखाधड़ी से जुड़े जोखिमों को कम करना है। इसके अंतर्गत वे निष्क्रिय और डिस्कनेक्टेड मोबाइल नंबर को बैंकों को साझा करते हैं। आरबीआई और डीओटी ने बैंकों को सूचित किया है कि वे इन मोबाइल नंबरों से जुड़े बैंक खातों/वॉलेट प्रोफाइल पर उचित जांच-पड़ताल करने के लिए डिस्कनेक्टेड मोबाइल नंबरों की सूची का उपयोग करें।

लॉ इन्फ़ोर्समेंट एजेंसियां (एलईए): बैंक को नियामकीय आवश्यकताओं के अंतर्गत विभिन्न कानून प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा पीएमएल/आईटी/एफ़ईएमए /जीएसटी नियम/अधिनियम के तहत मांगी गई जानकारी को प्रदान करना अनिवार्य है।

उपर्युक्त कार्यों के अलावा भी मुंबई इकाई द्वारा कुछ अन्य कार्यों के सम्पादन हेतु फॉलोअप सुनिश्चित किया जाता है, यथा, यूसीआईसी (यूनिक कस्टमरआइडेंटिफिकेशन कोड), सीआईएफ़ (किफ़) डी-डुप्लिकेशन, वी-सिप इत्यादि।

लखनऊ इकाई द्वारा संचालित कार्यों का संक्षिप्त विवरण

संव्यवहार की निगरानी भौगोलिक सीमाओं से परे वित्तीय प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका उपयोग वित्तीय संस्थानों द्वारा संभावित जोखिम वाले संव्यवहार की निगरानी और समीक्षा करने के लिए किया जाता है। संव्यवहार की निगरानी को उस प्रक्रिया के रूप में पारिभाषित किया जा सकता है जिसके तहत वित्तीय लेन-देन की बारीकी से निगरानी और जांच की जाती है और परिणामस्वरूप उपयोगकर्ता संव्यवहार के पैटर्न या व्यवहार की पहचान करने में सक्षम होते हैं। यह प्रक्रिया ग्राहकों की अवैध गतिविधियों के बारे में संकेत या सूचना देती है। उपयोगकर्ता को प्राप्त संकेत कुछ गंभीर गतिविधियों की ओर भी इशारा करते हैं, जैसे एमएलटीएफ़ (मनी लॉन्ड्रिंग और आतंकवाद वित्तपोषण), पहचान की चोरी, ड्रग तस्करी, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी आदि।

वैश्वीकरण के युग में और दिन-प्रतिदिन तकनीकी उन्नति को देखते हुए, वित्तीय संस्थाओं ने खुद को स्वचालित उपकरणों से सुसज्जित किया है और यहां तक कि एआई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) की सेवाओं का उपयोग करना भी प्रारम्भ कर दिया है, लेकिन दूसरी ओर अवैध गतिविधियों में सम्मिलित व्यक्ति/समूह/संस्था भी वित्तीय प्रणाली को हतोत्साहित करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रहे हैं। इसलिए वित्तीय संस्थाओं की प्रणाली को मजबूत करने के लिए संव्यवहार की निगरानी एक सतत एवं सजग प्रक्रिया है। बढ़ते डिजिटल लेनदेन के युग में एक मजबूत और सुरक्षित संव्यवहार निगरानी प्रणाली वर्तमान समय की आवश्यकता है।

उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए तथा भारतीय रिजर्व बैंक एवं एफआईयू-इंडिया के निर्देशों के अनुसार, हमारा बैंक एफआईयू-इंडिया/आईबीए द्वारा निर्धारित परिदृश्यों के आधार पर अलर्ट तैयार करने के लिए एएमएल सॉफ्टवेयर का उपयोग कर रहा है, जिसके अंतर्गत एआइ (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) की सेवाओं का भी उपयोग किया जा रहा है। लखनऊ इकाई का मुख्य कार्य वित्तीय लेनदेन/संव्यवहार से संबंधित डेटा की प्रोसेसिंग और चेतावनी (अलर्ट) प्रबंधन है। यह एक समयबद्ध कार्य है जिसका सख़्ती से पालन किया जाता है अन्यथा बैंक एवं ग्राहक दोनों के लिए वित्तीय जोखिम एवं हानि की संभावना अत्यधिक बढ़ जाती है। समयबद्धता का उल्लंघन बैंक के लिए प्रतिष्ठा से जुड़ा जोखिम तो पैदा करता ही है, साथ ही नियामकों के समक्ष बैंक की छवि भी धूमिल करता है। समयबद्ध अलर्ट प्रबंधन के लिए इस विभाग के साथ-साथ बैंक के अन्य संबंधित विभागों/शाखाओं की प्रतिबद्धता अति आवश्यक है। हमने शाखाओं द्वारा ऑफ़लाइन अलर्ट की रिपोर्टिंग हेतु स्टार डेस्क पोर्टल पर एक प्लैटफ़ार्म बनाया है जिसके द्वारा शाखाएँ पूर्व निर्धारित प्रारूप में संदेहास्पद खातों से संबंधित जानकारी तीव्रता से संव्यवहार निगरानी एवं केवाईसी/एएमएल विभाग को प्रेषित कर सकती हैं। निर्धारित प्रारूप का पाथ इस प्रकार है:-

स्टारडेस्क → ऑनलाइन फॉर्म → संव्यवहार निगरानी विभाग (ऑफलाइन रिपोर्टिंग)

बहुतायत तकनीकी नवीकरण के बावजूद भी, अभी चुनौतियाँ शेष हैं। उनमें से कुछ चुनौतियों की चर्चा यहाँ पर की जा सकती है। अनिवार्य फील्ड्स में उल्लंघनों को रोकने के लिए सीबीएस में सिस्टम स्तर पर कुछ जांच / चेक रखे गए हैं, हालांकि सीबीएस यूज़र द्वारा जंक वैल्यूज भर दिए जाने के कारण कुछ अवांछित विसंगतियां उत्पन्न हो जाती हैं। यह भी पाया गया है कि कई मामलों में ग्राहकों को उचित तरीके से ओनबोर्ड नहीं किया जाता है जिससे बैंक में म्यूल खातों की संख्या में वृद्धि देखी गई है। ग्राहक प्रोफ़ाइल शीट में जानकारियाँ अधूरी पाई गई हैं। शाखा स्तर पर ग्राहक से संबंधित जानकारी में अशुद्धि या जानकारी की अनुपस्थिति के कारण अलर्ट प्रबंधन के समय निर्णय लेने पर असर पड़ रहा है। विभाग की कार्यक्षमता/उत्पादकता को नई ऊंचाई तक ले जाने हेतु नियमित तकनीकी विकास के साथ- साथ संबंधित विभागों/शाखाओं से और अधिक सहयोग की आवश्यकता अपेक्षित है।

राष्ट्र निर्माण में नारी की भूमिका - अतीत, वर्तमान और भविष्य

जिम्मी
अधिकारी
फ़ूसरो बाज़ार शाखा
बोकारो

"देश की वीरांगनाएँ भी वीरों से कम नहीं,
मर मिटी हैं देश पर तनिक भी उनको गम नहीं।"

पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति एवं संभावना के बारे में अनेक मत हैं। वैज्ञानिक तौर पर अलग, तो प्राचीन मान्यताओं के तौर पर कुछ और, कुछ तथ्यपरक हैं तो कुछ कथापरक हैं। परंतु इस बात को झुठलाया नहीं जा सकता है कि हर जीव को जन्म देने वाली मादा ही होती है। मानव प्रजाति इसे नारी, महिला, स्त्री आदि संज्ञाओं से पहचान देती है। नारी न केवल जीवन देती है बल्कि उस जीव के कुशल लालन-पालन की भी पूरी जिम्मेदारी अदा करती है। अन्य शब्दों में नारी, समाज में जीवन का आधार है। नारी को समाज में जीवन का ही नहीं बल्कि सृष्टि का भी आधार माना गया है। वह समाज की प्रथम अध्यापिका और समाज की प्रथम स्तम्भ है। नारी के बिना कोई भी समाज या राष्ट्र पूर्ण नहीं हो सकता है। नारी की भूमिका राष्ट्र निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण है। साहित्यकार गरिमा सक्सेना लिखती हैं:

"सृष्टि नहीं नारी बिना, यही जगत आधार,
नारी के हर रूप की महिमा बड़ी अपार।
जिस घर में होता नहीं, नारी का सम्मान,
देवी पूजन व्यर्थ है, व्यर्थ वहाँ सब दान।"

नारी समाज का वह अंग है जिसके बिना जीवन संभव नहीं है। नारी समर्पण, प्रेम, शीतलता व कर्तव्यनिष्ठा का प्रतीक है। हमारे ब्रह्मांड में अनगिनत रहस्य हैं, जिन्हें वैज्ञानिकों ने अभी तक नहीं सुलझाया है। लेकिन सबसे गहरे और स्थायी रहस्यों में से एक ब्रह्मांड में महिलाओं की भूमिका है। हालांकि, महिलाओं की समाज में अक्सर अनदेखी की गई है। समय की शुरुआत से ही जीवन की निरंतरता के लिए नारी का होना आवश्यक है। नारी जीवन दायिनी, शिशुओं की पालनहारी और घर की रखवाली होती है। कई मायनों में महिला समाज की नींव है। नारी वह हाथ है जो परिवार को जोड़कर रखती है। इतना ही नहीं यदि नारी शिक्षित हो तो वह पूरे परिवार को शिक्षित करती है, शायद इसीलिए कहा जाता है कि किसी भी व्यक्ति की पहली शिक्षक उसकी माँ ही होती है।

"महिलाओं को दें शिक्षा का उजियारा,
पढ़-लिख कर करे रोशन जग सारा।"

उपरोक्त पंक्तियाँ दर्शाती हैं कि यदि महिलाओं को शिक्षित किया जाए तो वे पूरे समाज को शिक्षित करने में अपना योगदान देंगी। जिससे राष्ट्र का उत्थान होगा। अतीत के पन्नों को पलटा जाए तो हम पाएंगे कि कई महान महिलाओं ने भारतवर्ष की भूमि पर जन्म लिया और इसे स्वतंत्रता दिलाने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। इसमें से कुछ वीरांगनाएँ निम्नलिखित हैं:

रानी लक्ष्मीबाई : रानी लक्ष्मीबाई ने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में एक अहम भूमिका निभाई व भारत की आदर्श नारियों में अपना नाम दर्ज करवाया। सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता की कुछ पंक्तियाँ यहाँ उल्लेखनीय हैं:

"चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसीवाली रानी थी।"

सरोजिनी नायडू: स्वर कोकिला कही जाने वाली सरोजिनी नायडू ने एक कवयित्री व राजनीतिक कार्यकर्ता के रुप में अपना योगदान दिया। वे भारत की प्रथम महिला राज्यपाल थीं व भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की दूसरी महिला प्रेसिडेंट बनी जिससे अन्य महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में आगे आने की प्रेरणा मिली।

सुचेता कृपलानी: सुचेता कृपलानी एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी एवं राजनीतिज्ञ थीं। उन्होंने भारत की प्रथम महिला मुख्यमंत्री के रुप में राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दिया।

इंदिरा गाँधी: इंदिरा गाँधी भारत की प्रथम व एक मात्र महिला प्रधानमंत्री रहीं। वे देश का नेतृत्व करने वाली सबसे करिश्माई राजनेता थीं। उन्होंने राष्ट्र को कई सौगातों से नवाजा था व राष्ट्र को समृद्ध व संतुलित बनाने में अपना योगदान दिया।

सावित्री बाई फुले: सावित्री बाई फुले भारत की प्रथम महिला शिक्षिका थीं, जिन्होंने ज्ञान दान से सामाजिक उत्थान का बेड़ा उठाया व शिक्षित राष्ट्र बनाने में अपना योगदान दिया।

कैप्टन लक्ष्मी सहगल: स्वतंत्रता आंदोलन में कई महिलाओं ने भी अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था, इनमें से एक नाम है कैप्टन लक्ष्मी सहगल। उन्होंने स्वतंत्रता सेनानी के रूप में राष्ट्र निर्माण व विकास में अपना योगदान दिया।

सुभद्रा कुमारी चौहान: सुभद्रा कुमारी चौहान भारत की महान कवयित्रियों में से एक हैं। उन्होंने अपनी कलम की ताकत से अपना संदेश जन-जन तक पहुँचाया व राष्ट्र निर्माण को एक नई राह दी। आज के आधुनिक युग में नारी ने सभी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। वह शिक्षा, राजनीति, समाज सेवा, व्यवसाय, खेलकूद आदि सभी क्षेत्रों में पुरुषों के बराबर की भागीदारी निभा रही है। नारी ने राष्ट्र निर्माण में निम्नलिखित क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

विभिन्न क्षेत्रों में नारी की भूमिका:

शिक्षा : नारी ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज महिलाएँ पुरुषों के बराबर शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। वे डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, शिक्षक, अधिवक्ता, बैंकर, आई.ए.एस., आई.पी.एस. इत्यादि के रूप में कार्य कर रही है। यहाँ तक कि पुलिस हो या फौज, वैज्ञानिक हो या व्यवसायी प्रत्येक क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण पदों पर स्त्रियाँ आज सम्मान के साथ आसीन हैं। किरण बेदी, कल्पना चावला, मीरा कुमार, सोनिया गाँधी, बछेंद्री पाल, संतोष यादव, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल, पी. टी. उषा, कर्णम मल्लेश्वरी आदि की क्षमता एवं प्रदर्शन को भुलाया नहीं जा सकता। आज नारी पुरुषों से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं और देश को आगे बढ़ा रही हैं।

राजनीति : नारी ने राजनीति के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज महिलाएँ देश की विभिन्न राजनीतिक पार्टियों में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। वे सांसद, मंत्री के रूप में कार्य कर रही हैं।

समाज सेवा : नारी ने समाज सेवा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वे विभिन्न सामाजिक संगठनों के माध्यम से गरीब, असहाय और जरुरतमंद लोगों की सहायता कर रही हैं।

व्यवसाय : नारी ने व्यवसाय के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज महिलाएँ विभिन्न व्यवसायों में सफलतापूर्वक कार्य कर रही हैं। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उद्यमिता क्षेत्र में महिला उद्यमियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कई तरह की योजनाएँ शुरु की गई हैं लेकिन यह तो हम सभी जानते हैं कि उद्यमशीलता को बढ़ाने के लिए पूँजी एक महत्वपूर्ण कारक है। इस दिशा में बैंकों का संपूर्ण सहयोग रहा है। बात चाहे एकल महिला उद्यमी को मुद्रा ऋण उपलब्ध करवाने की हो या फिर स्वयं सहायता समूह के माध्यम से पूरे समूह को ऋण उपलब्ध करवाना हो। बैंक समूहों को समय-समय पर ऋण की राशि उपलब्ध करवाता है जिससे वे अपना कार्य सुचारु रूप से कर सकें। इसके तहत उन्हें तीन लिंकेज में ऋण की राशि प्रदान की जाती है। पहली बार में उन्हें 1.5 लाख रु. की राशि दी जाती है। दूसरी बार उन्हें 3 लाख रु. एवं तीसरी बार में 6 लाख रु. की राशि प्रदान की जाती है। इस राशि का उपयोग कर समूह की महिलाएँ अपनी नई पहचान बना रही हैं, कोई सफल उद्यमी बनकर सामने आ रही हैं तो कोई समाज का कल्याण करने में अपनी भूमिका निभा रही हैं।

खेलकूद : महिलाओं ने खेलकूद के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज महिलाएँ विभिन्न खेलों में पुरुषों के बराबर प्रतिभा का प्रदर्शन कर रही हैं। साइना नेहवाल हो या निखत जरीन खेलकूद में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं और सैकड़ों लड़कियों को प्रेरित कर रही हैं।

भविष्य में राष्ट्र निर्माण में नारी की भूमिका की बात की जाए तो यह कहना सार्थक होगा कि नारी विधाता की सर्वोत्तम और नायाब सृष्टि है। नारी की सूरत एवं सीरत की पराकाष्ठा और उसकी गहनता को मापना दुष्कर ही नहीं अपितु नामुमकिन है। सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक जगत में नारी के विविध स्वरूपों का न केवल बाह्य अपितु अंतर्मन के भाव सौन्दर्य से परिपूर्ण है। नारी के लिए यह कहा जाए कि यह विविधता में

एकता है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इन्हीं विविध शक्तियों के परिणामस्वरुप महिलाओं का राष्ट्र निर्माण एवं विकास में अद्भुत, अतुल्य योगदान भविष्य में भी रहेगा। महिलाओं के इस सतत योगदान को कुछ बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है :

माँ, पत्नी, गृहिणी के रूप में परिवार एवं समाज का आधार: मानव कल्याण की भावना, कर्तव्यनिष्ठा, सृजनशीलता एवं ममता को सर्वोपरि मानते हुए महिलाओं ने इस जगत में माँ के रुप में अपनी सर्वोपरि भूमिका निभाई है तथा राष्ट्र निर्माण में अपने दायित्वों का वहन आगे भी करेंगी। माँ के पश्चात एक पत्नी ही होती है जो हर हाल में व्यक्ति का साथ देती है, उसे हौसला देती है। सच ही कहा गया है कि स्त्री जब अर्धांगिनी बनती है तब वह खुशियों को दुगुना और मुश्किलों को आधा कर देती है। भारतीय समाज में महिलाएँ परिवार की मुख्य धुरी होती हैं जो कि एक गृहिणी के रुप में राष्ट्र निर्माण और विकास में अपनी उत्कृष्ट भूमिका निभाती है।

संस्कृति, संस्कार और परम्पराओं की संरक्षिका के रुप में : महिलाएँ ही संस्कृति, संस्कार और परम्पराओं की वास्तविक संरक्षिका होती हैं। ज्यादातर घरों में वे ही पुरानी परम्पराओं को नई पीढ़ी को सिखाने एवं बताने का कार्य करती हैं। सभ्यता, संस्कृति, संस्कार और परम्परा महिलाओं के कारण ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती है।

"त्याग की सूरत, ममता की मूरत तो कभी देवी का प्रतिरुप रही,
जैसी वक्त ने माँग करी, वह ढलती उसके अनुरुप रही।।"

स्वतंत्रता, राजनीति, पत्रकारिता आदि में योगदान: महिलाएँ स्वतंत्रता आंदोलन में आगे रहीं, उसी तरह अब वे हर क्षेत्र में आगे बढ़कर अर्थव्यवस्था को गति दे रही हैं। चाहे पत्रकारिता हो या राजनीति या फिर सूचना प्रौद्योगिकी का क्षेत्र हो हर जगह वे बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही हैं और आगे आने वाले दिनों में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं होगा जहाँ महिलाएँ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर न चल रही हों।

आज मीडिया, पत्रकारिता एवं जनसंचार के क्षेत्र में भी महिलाओं का वर्चस्व कायम है। सेना में, वायुयान उड़ाने, शिक्षा, विज्ञान, खेलकूद, व्यवसाय, सूचना प्रौद्योगिकी, चिकित्सा इत्यादि क्षेत्रों में भी महिलाएँ अब अग्रिम पंक्ति में खड़ी हैं और भारत के विकास में अहम भूमिका निभा रही हैं।

ओ सखी!

ओ सखी!
वो कहेंगे कम बोलो,
कम हो, कम रहो,
आवाज़ ऊँची मत करो,
नजरें झुका कर चलो,
सपनों की उड़ान मत भरो,
घर की इज्ज़त तुमसे है,
इन दीवारों में कैद रहो,
परिवार ही दुनिया है तुम्हारी,
रसोई ही कर्मभूमि है तुम्हारी,
तुम इसमें ही उलझी रहो,
लेकिन ओ सखी, तुम कम सुनना,
सीता और दुर्गा की पावन धरा पर,
तुम अपनी अलग कहानी बुनना,
अपने सपनों की उड़ान भरना,
तुम खुद अपनी पहचान बनाना,
मंजिल अपनी तुम तलाश करना,
अपने जीवन की पतंग की डोर,
तुम अपने हाथों में थामे रखना,
खुद को तुम सुलझाये रखना,
अपनी पहचान बनाए रखना,
ओ सखी! जब कहने वाले हों बहुत,
तुम थोड़ा कम सुनना!
अबला नही, सबला हो तुम,
ओ सखी! इस समाज का आधार हो तुम।

अञ्जु कुमारी
ग्राहक सेवा सहायक
धनबाद आंचलिक कार्यालय

मन के विकारों की औषधि - ध्यान

स्वाति ठाकुर
ग्राहक सेवा सहायक
आंचलिक कार्यालय
भोपाल

पिछले कुछ वर्षों में हमारा जनजीवन बहुत तेजी से बदला है। इस बदलाव ने हमारी दिनचर्या को जितना आसान बनाया है उतना ही हमारी मानसिक और शारीरिक सेहत को नुकसान भी पहुंचाया है। आज की तेज़-तर्रार और तनाव से भरी दुनिया में मानसिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को बनाए रखना एक चुनौती है। चिंता, अवसाद और भावनात्मक थकान के बढ़ते मामलों के मद्देनज़र लोग अपने आंतरिक स्वास्थ्य को प्रबंधित करने के तरीकों की तलाश कर रहे हैं। शरीर के बारे में तो लोग जागरूक हैं। व्यायाम करके, विभिन सप्लिमेंट लेकर या डॉक्टर से दवा आदि लेकर शरीर को स्वस्थ रखते हैं। परन्तु इस भागती-दौड़ती जिंदगी में हम सभी अपने मानसिक स्वास्थ्य एवं आन्तरिक शांति को सबसे ज्यादा नज़रअंदाज़ कर रहे हैं। हम थोडा अपने आस-पास देखें, तो ऐसे बहुत से परिचित मिलेंगे जो पहले एकदम सामान्य जीवन जी रहे थे, परन्तु समय के साथ उनके स्वभाव में बदलाव आए हैं जो उनके व्यक्तित्व से मेल नहीं खाते, यह कोई बड़ी बात नहीं है कि वो शख्स स्वयं हम ही हों।

मन की इन स्तिथियों को समझने सँभालने और संयमित करने का सबसे आसान और सही तरीका है, ध्यान। यह एक प्राचीन और प्रासंगिक अभ्यास है जो व्यापक रूप से मन को नियंत्रित करने में प्रभावशाली रहा है। आध्यात्मिक परंपराओं में निहित और आधुनिक विज्ञान द्वारा सिद्ध 'ध्यान' मानसिक स्पष्टता, भावनात्मक स्थिरता और समग्र मनोवैज्ञानिक लचीलेपन को बढ़ावा देने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरा है। यह योग का एक अंग है। योग केवल शारीरिक क्रिया नहीं है बल्कि मानसिक भी है। योग के एक अंग आसन के द्वारा जहाँ एक तरफ हम अपने शरीर को स्वस्थ बना सकते हैं, वहीं ध्यान के द्वारा हम अपने मस्तिष्क में चल रही अनंत हलचलों को शांत करते हैं। प्राचीन शास्त्रों के अनुसार हमारे शरीर में विभिन्न चक्रों द्वारा ऊर्जा का प्रबंधन होता है। ऐसे सात महत्वपूर्ण चक्र हैं, जिन्हें उर्जा केंद्र भी कहते हैं, जो कि हमारे शरीर की विभिन्न क्रियाओं को नियंत्रित करते हैं। ध्यान के द्वारा इन चक्रों को सक्रिय किया जाता है।

कोविड-महामारी का दौर इस बात का साक्ष्य बना है कि चकाचौंध की तरफ भागती दुनिया को रोज कुछ समय अपने आप और प्रकृति के साथ बिताना चाहिए। यहाँ तक कि हमारी सरकार ने भी वैश्विक स्तर पर अंतराष्ट्रीय योग दिवस को मान्यता दिलाकर योग को दैनिक जीवन का अंग बनाने पर जोर दिया है। कहा जाता है कि 'कस्तूरी कुंडल बसे, मृग ढूंढे वन माहि' जिस तरह मृग को अपने भीतर बसी कस्तूरी बाहर वन में ढूंढने से नहीं मिलती, ठीक उसी तरह मन की शांति हो या अंतर्मन की ख़ुशी हमें बाहर की दुनिया में ढूंढने की बजाय अपने भीतर ही मिलेगी। यदि हम अपने जीवन का सिर्फ आधा घंटा योग को और दस मिनट ध्यान को और कुछ समय प्रकृति को दें, तो हमारा मन शांत एवं स्वस्थ रहेगा, जो हमें कार्यालय, परिवार एवं सामाजिक जिम्मेदारियों के उत्कृष्ट निर्वहन करने में मदद करेगा। ध्यान मन को केंद्रित करने और मानसिक शांति, स्पष्टता एवं भावनात्मक संतुलन की स्थिति को प्राप्त करने के लिए विकर्षणों को दूर करने का अभ्यास है। ध्यान के विभिन्न रूप हैं - जैसे कि माइंडफुलनेस मेडिटेशन, ट्रांसेंडेंटल मेडिटेशन और गाइडेड विज़ुअलाइज़ेशन - सभी का उद्देश्य व्यक्तियों को बिना किसी निर्णय के अपने विचारों और भावनाओं के बारे में अधिक जागरूक होने में मदद करना है।

ध्यान तनाव और चिंता को कम करता है। यह 'कोर्टिसोल', जो तनाव हार्मोन है, के स्तर को कम करने में मदद करता है। जामा इंटरनल मेडिसिन द्वारा किए गए एक अध्ययन में निष्कर्ष निकला है कि माइंडफुलनेस मेडिटेशन लोगों में चिंता और तनाव के लक्षणों को काफी हद तक कम कर सकता है। ध्यान एकाग्रता को बढ़ाता है। ध्यान भावनाओं के संप्रेषण में सुधार करता है। एक शोध के अनुसार ध्यान भावनाओं के आदान-प्रदान, आत्म-जागरूकता और आत्मनिरीक्षण से जुड़े मस्तिष्क क्षेत्रों में ग्रे मैटर घनत्व को बढ़ाता है, जिससे व्यक्तियों को अपनी भावनाओं को अधिक प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में मदद मिलती है। यह नींद को बेहतर बनाता है। जामा इंटरनल मेडिसिन के शोध में पता चला कि माइंडफुलनेस मेडिटेशन से नींद की गुणवत्ता में सुधार हुआ और वृद्ध वयस्कों में अनिद्रा के लक्षण कम हुए। मानसिक विकारों को कम करने के अलावा, ध्यान समग्र मनोवैज्ञानिक सुधार में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह आंतरिक शांति, आत्म-स्वीकृति और जीवन संतुष्टि की भावना पैदा करता है। न्यूरोसाइंटिफिक स्टडीज इस बात की पुष्टि करती है कि ध्यान से मस्तिष्क में संरचनात्मक परिवर्तन हो सकते हैं। लंबे समय तक ध्यान करने वालों के मस्तिष्क में ध्यान और संवेदी प्रसंस्करण से संबंधित क्षेत्रों की कॉर्टिकल मोटाई में वृद्धि हुई है। ये निष्कर्ष नियमित ध्यान के मनोवैज्ञानिक लाभों को जैविक आधार प्रदान करते हैं।

ध्यान का अभ्यास शुरू करने के लिए किसी विशेष उपकरण या लंबे चौड़े टाइम-टेबल की आवश्यकता नहीं होती है। रोजाना केवल 10 से 15 मिनट की माइंडफुलनेस से भी आश्चर्यजनक सुधार संभव हैं। ध्यान करने की नियमित आदत बनाने और उसे बनाए रखने के लिए आजकल मोबाइल ऐप, ऑनलाइन कक्षाएं और ध्यान करने वालों के समूह सहज उपलब्ध हैं। ध्यान केवल एक आध्यात्मिक अभ्यास नहीं है - यह मानसिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक रूप से समर्थित क्रिया है। यह व्यक्तियों को तनाव का प्रबंधन करने, भावनात्मक लचीलापन विकसित करने और अराजक दुनिया में आंतरिक शांति पाने में सक्षम बनाता है। दुनिया में जब अधिकाधिक लोग ध्यान को अपनाएंगे, तो यह न केवल लोगों को स्वस्थ्य करेगा, बल्कि समग्र रूप से समाज को अधिक जागरूक और दयालु बनाने का मार्ग भी प्रशस्त करेगा।

जलधारा

निकलती है हिम शिखरों से,
रिस-रिस कर आगे बढ़ती है,
कहीं बहती हुई झरना बन जाती है,
फिर आगे रूप नदी का ले लेती है।

होती हुई सुन्दर बगानों से,
कल-कल करती बहती जाती,
कहीं निकलकर खेत-खलिहानों से,
प्रकृति के कण-कण को महकाती।

चन्द्र किरणों सी शीतलता लिए,
सर्पाकार चलती रहती है,
जंगल, झाड़ियाँ, मैदान, मरुस्थल,
सबको सींचते हुए राह बनाती है।

होती हुई अनेक गाँवों और शहरों से,
हर जीव की प्यास मिटाती है,
जीवन स्त्रोत बनकर सभी का,
यह पूजनीय कहलाती है।

अस्तित्व अपना छोड़कर पीछे,
अनादि नदियों में मिल जाती है
अंततः सागर में जा मिलकर,
यह जलधारा नदी से सागर बन जाती है।

सुलेखा शर्मा
आंचलिक कार्यालय चंडीगढ़

पौराणिक एवं ऐतिहासिक नगरी बिठूर

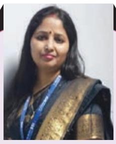

सुनीता यादव
प्रबंधक (राजभाषा)
कानपुर आंचलिक कार्यालय

बिठूर देश की पवित्र नदी माँ गंगा के किनारे स्थित विभिन्न ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहरों को अपने कलेवर में सहेजता हुआ एक प्रसिद्ध नगर है। यह नगर उत्तर प्रदेश के मुख्य औद्योगिक शहर कानपुर से लगभग 22 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। बिठूर महल में विद्यमान अभूतपूर्व विरासत का दर्शन करने के लिए पर्यटकों की आवाजाही नियमित रूप से बनी रहती है।

इस स्थल से जुड़ी हुई प्राचीन कथाओं के अनुसार बिठूर, भगवान विष्णु द्वारा ब्रह्माण्ड के पुनर्निर्माण के पश्चात् भगवान ब्रह्मा का निवास स्थान बन गया था। यह बात जनसाधारण में प्रसिद्ध है कि ब्रह्मा जी ने उत्पलारण्य नामक वन में अश्वमेघ यज्ञ किया था और सृष्टि की रचना की थी। यज्ञ पूर्ण होने के बाद उसी जंगल को 'ब्रह्मावर्त' घाट अर्थात ब्रह्मा का आसन नाम दिया गया, जिसे स्थानीय लोग बिठूर के नाम से पुकारने लगे। यह घाट बिठूर का सबसे पवित्र घाट है। इस घाट के पास ही ब्रम्होश्वर महादेव मंदिर भी स्थित है और यह मंदिर आदिकाल के चार शिवालयों में से एक है। यहां प्रसिद्ध मान्यता है कि ब्रह्मा जी ने सृष्टि रचना से पूर्व देवों के देव महादेव जी की पूजा-अर्चना की थी और गंगा के बालू से शिवलिंग बनाकर यज्ञ किया था। कई वर्षों के महायज्ञ के पश्चात बालू का शिवलिंग पत्थर के शिवलिंग में परिवर्तित हो गया। ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मा जी ने मनु और शतरूपा की रचना की और इस स्थल को धरती का केंद्र बिंदु माना गया। कहा जाता है कि सृष्टि रचना के पश्चात प्रतीक के रूप में एक खूंटी गाड़ दी गई थी और इसी खूंटी को श्री ब्रह्मा खूंटी के नाम से जाना जाता है। इसके पास ही पाथर घाट नाम का प्रसिद्ध घाट है जो लाल पत्थरों से बना है।

इस स्थान से जुड़ी हुई दूसरी कथा का संबंध प्रसिद्ध महाकाव्य रामायण से है। रामायण महाकाव्य जैसी कालजयी रचना का सृजन महर्षि वाल्मिकी जी ने इसी बिठूर स्थान पर किया था। यह किंवदंति है कि जब श्री राम जी ने माता सीता जी का त्याग किया था तो सीता माता ने महर्षि वाल्मिकी जी के आश्रम को अपना निवास स्थान बनाया था और महर्षि जी की देख-रेख में भगवान राम एवं सीता माता के पुत्र लव-कुश का जन्म यहीं हुआ और उनका बचपन यहीं पर गुजरा और साथ ही शिक्षा दीक्षा भी यहीं पर हुई थी। इस आश्रम के साथ भी कई कहानियाँ जुड़ी हुई हैं। यह आश्रम काफी भव्य है और अत्यंत ही ऊचाई पर निर्मित है। आश्रम तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ बनाई गई हैं। वहाँ के स्थानीय लोगों का कहना है कि यहाँ की सीढ़ियाँ सरग नशेनी अर्थात स्वर्ग तक ले जाने वाली सीढ़ी के नाम से जानी जाती हैं और आश्रम के मुख्य द्वार के पास ही माता सीता की रसोई बनाई गई है, जहां से सीढ़ियों का रास्ता बनाया गया है। इस आश्रम के आस-पास कई मंदिर हैं। एक मंदिर महर्षि वाल्मिकी जी का है, जहां उनकी प्रतिमा स्थापित है। आश्रम के पास लगे हुए पुरातत्व विभाग के बोर्ड अनुसार वाल्मिकी मंदिर का जीर्णोद्धार पेशवा बाजीराव द्वितीय द्वारा 19वीं शताब्दी में कराया गया था। यहीं पर लव-कुश का जन्म-स्थल मंदिर है, जहां पर माता सीता की प्रतिमा, लव-कुश जन्म भूमि, श्री दक्षिण मुखी हनुमान प्रतिमा स्थापित है। यहाँ पर लगे बोर्ड के अनुसार लव-कुश ने श्रीराम के अश्वमेघ यज्ञ के घोड़े को पकड़ा था और वीर हनुमान को बंदी बना लिया था। तुलसीदास द्वारा रचित "रामचरितमानस" एवं वाल्मीकि रामायण के 'उत्तरकाण्ड' में लव कुश के बारे में लिखा गया है।

एक अन्य मान्यता जो इस स्थान से जुड़ी हुई है, वह है - मनु

के पौत्र बालक ध्रुव ने इसी स्थान पर भगवान विष्णु की एक पैर पर खड़े होकर अत्यंत ही कठिन तपस्या की थी और उनकी इस तपस्या से खुश होकर ईश्वर ने उन्हें एक दैवीय तारे के रूप में सदा के लिए चमकने का वरदान दिया था। जहां बालक ध्रुव ने तपस्या की थी वह स्थान आज भी ध्रुव टीला के रूप में विद्यमान है। ध्रुव तारे की कठिन तपस्या की कहानी आज भी जनमानुष द्वारा कही जाती है और बालक ध्रुव की कहानी मानव को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। हिन्दी के एक कवि रितेश तिवारी जी ने ध्रुव तारा की कठिन तपस्या का वर्णन निम्नरूप से किया है

ध्रुव तारा बन जाऊँ।
अपने प्रकाश से जग चमकाऊँ।।
अपनी भक्ति भाव की निष्ठा से।
ईश्वर को धरा पर ले आऊँ।।
संकल्प को कर मजबूत।
हर लक्ष्य को पूरा मैं कर पाऊँ।।
न रोक सकें कोई भी बंधन।
जिस राह पे भी मैं इक बार चल पाऊँ।।

प्रसिद्ध मैथिल कवि विद्यापति ने भी बिठूर का वर्णन अपने 'ब्रह्मावर्त अध्याय' में किया है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी बिठूर की महत्ता सर्वविदित है। इतिहासकारों के अनुसार सन् 1857 के विद्रोह की भूमिका और योजना बिठूर में ही बनाई गई थी। देश की आजादी की पहली लड़ाई में जिन महान क्रांतिकारियों की भूमिका अतुलनीय रही है, वे हैं - नानाराव पेशवा, तात्या टोपे, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, अजीमुल्ला खान आदि। इन महान क्रांतिकारियों की यादें इस धरती के साथ जुड़ी हुई हैं। बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहेब पेशवा ने अंग्रेजों के खिलाफ क्रांति की शुरूआत कानपुर के बिठूर में ही की थी। नाना साहब ने अपने वकील अजीमुल्लाह के साथ मिलकर विद्रोह की रणनीति बनाई थी और तात्याटोपे को अपना कमांडर इन चीफ के रूप में नियुक्त किया था। 'कानपुर चलो' का नारा बिठूर के किले से नाना साहब ने दिया और कानपुर में हर जगह आजादी की चिंगारी फैल गई। कई रियासतों ने इनका साथ दिया। बिठूर के रमेल नगर के मल्लाहों ने इस आजादी की जंग में नाना साहब का साथ दिया। महारानी लक्ष्मीबाई ने अपना बचपन यहाँ व्यतीत किया। इसके साथ ही उन्होंने यहीं पर घुड़सवारी, तीरांदाजी युद्ध करने की कला का प्रशिक्षण लिया था, जिसकी वीरता बखान करते हुए हिंदी की सुप्रसिद्ध कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान जी ने अपनी कविता में लिखा है.....................

कानपुर के नाना की, मुंहबोली बहन छबीली थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के संग पढ़ती थी वह, नाना के संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी।
लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

नाना राव पेशवा की याद में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा नाना राव स्मारक पार्क का निर्माण करवाया गया है। इन क्रांतिकारियों की याद को संग्रहित करने के लिए संग्रहालय भी बनाया गया है, जिसमें स्वतंत्रता सेनानियों से संबंधित वस्तुएं रखी गई हैं।

बिठूर नगर की महत्ता न केवल पौराणिक है, बल्कि ऐतिहासिक भी है। वर्तमान समय में यह नगर उत्तर प्रदेश राज्य के एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल के रूप में भी जाना जाता है। पवित्र गंगा के तट पर स्थित यह नगर मनमोहक हरियाली और गुफाओं तथा झरनों से भी घिरा हुआ है। सैकड़ों की संख्या में पर्यटक इस स्थान का भ्रमण करने के लिए आते हैं ताकि जीवन की व्यस्तता से दूर फुरसत के साथ सुकून के दो पल व्यतीत कर सकें और धर्मभक्ति एवं देश भक्ति का अनोखा दर्शन भी कर सकें। यहाँ कार्तिक पूर्णिमा के दिन गंगा नदी के किनारे लगने वाला कार्तिक अथवा कतकी मेला पूरे भारतवर्ष में प्रसिद्ध है। यहाँ का बिठूर महोत्सव भी अपनी एक अलग पहचान रखता है। इस महोत्सव का आयोजन बड़े स्तर पर किया जाता है, जिसमें अनेक प्रकार की प्रदर्शनी सहित सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। बिठूर नगर देश के प्रमुख धार्मिक और पौराणिक स्थलों में अपना एक विशेष स्थान रखता है।

बदलता युग - बदलते रिश्ते

डिम्पल गंगानी
अधिकारी
न्यू राणिप शाखा
अहमदाबाद अंचल

"समय बदला, ज़रूरतें बदलीं, रिश्तों के मायने भी बदल गए, लेकिन जो नहीं बदला वह है दिल के किसी कोने में दबी अपनों की यादों का सिलसिला। किसी जमाने में तकरार भी प्यार को बढ़ाती थी, अब एक हल्की बहस भी दूरियों को जन्म दे देती है। रिश्ते अब संवाद से नहीं, साइलेंट मोड से चलने लगे हैं। एक युग था जब हम परिवार के लिए जीते थे, अब हम खुद को साबित करने के लिए परिवार से दूर होते जा रहे हैं। समय के साथ घरों के दरवाज़े बंद होने लगे हैं और दिलों के दरवाज़े भी, पहले रिश्ते निभाने के लिए लोग अपनी पसंद छोड़ देते थे, अब अपनी पसंद के लिए लोग रिश्ते छोड़ देते हैं।"

भावेश पटेल जी अपने जीवन के 60 वर्ष पूरे करने पर आज सेवानिवृत हो रहे थे। बात यह नहीं थी कि वह इस दिन के लिए तैयार नहीं थे, अपितु आज कार्यालय के अंतिम दिन उनके मन में यह उधेड़बुन थी कि अब समय कैसे कटेगा। बार-बार नौकरी के प्रथम दिन से आज तक का सफर मन में चलचित्र की तरह चल रहा था। वो अतीत के उस कालखंड में चले गए थे जब एक साधारण ग्रामीण परिवार की पृष्ठभूमि में रहते हुए उन्होंने ज़िंदगी की कठिनाइयों से दो-चार होते हुए कड़ी मेहनत से एक अच्छी नौकरी प्राप्त की थी। नौकरी के कारण वे अपने छोटे परिवार को संयुक्त परिवार से अलग ले जा कर दूर शहर में रहने लगे। उनके लिए परिवार से अलग होने की पीड़ा असहनीय थी, लेकिन परिवार की भलाई के लिए कठोर होकर उन्होंने उस पीड़ा को भी सहा। संघर्ष वह आग है, जिसमें कच्चा लोहा तपकर मजबूत इस्पात बनता है। यदि जीवन आसान हो, तो आत्मा कभी परिपक्व नहीं हो सकती।

इसी सोच में वह कब घर पहुंच गए पता ही नहीं चला। द्वार पर खड़ी पत्नी सरला ने उनका स्वागत किया। अभी सब सोफे पर बैठे ही थे कि फोन की घंटी बज गई । फोन उठाकर जैसे ही कान पर लगाया तो वे आवाक् रह गए। आखिर आज दो साल बाद उनके बेटे अतुल ने पिता को सेवानिवृत्ति की बधाई देने के लिए फोन जो किया था। अपने बेटे की आवाज सुनते ही भावेश जी थोड़े भावुक हुए जो कि स्वाभाविक ही था। फोन पर अतुल ने पिता को सेवानिवृत्ति के बाद उन्हें मां के साथ उनके पास अमेरिका आने को कहा तो अपनी दबी हुई आवाज में वह सिर्फ शुक्रिया ही कह पाए और फिर फोन पर दोनों तरफ से चुप्पी छा गई, फिर भावेश का गला रुँध सा गया तो उन्होंने फोन रख दिया।

भावेश पुराने मजबूत रिश्तों को अहमियत देते थे और वे युवावस्था में परिवार की आर्थिक सहायता के लिए नौकरी करने घर से निकले थे जबकि अतुल दो साल पहले अपना घर छोड़ कर सिर्फ इसलिए चला गया था कि उसके पिता उसे संघर्ष से लड़कर स्वावलंबी बनाना चाहते थे। भावेश ने अतुल को एक मध्यमवर्गीय परिवार की सभी सुख-सुविधाएं उपलब्ध कराई थी। अतुल की

पढ़ाई लिखाई अच्छे कान्वेंट स्कूल से हुई, उसके दोस्त आदि सब अच्छे परिवारों से ताल्लुक रखते थे। जब बच्चों को संघर्षों से बचाया जाता है तो वयस्क होने पर उन्हें आत्म निर्भर होने के लिए कडा संघर्ष करना पड़ता है, आसान जीवन सहनशक्ति को भी खत्म कर देता है। इसी तरह अतुल भी पढ़ा-लिखा बेरोजगार युवा बन चुका था और स्वभाव से वह काफी जिद्दी एवं फिजूल खर्च करने वाला हो गया था । अपनी बेरोजगारी की वजह से वह काफी चिड़ा-चिड़ा सा रहता था और अधिकतम समय अपने घर से बाहर अपने दोस्तों के साथ ही व्यतीत करता था । अपने पिता के बचाए हुए पैसों से अपनी ज़रूरतें पूरी करता था । पैसों की अहमियत उसे कभी समझ नहीं आई क्योंकि पिताजी कमाते थे तो उसकी ज़रूरतें भी पूरी हो जाती थीं। मां-बाप ने कई बार उसे समझाया कि अब उसे अपने पैरों पर खड़ा हो जाना चाहिए, मां-बाप तो आज हैं कल नहीं, फिर क्या करेगा। लेकिन वो हर बार उन पर गुस्सा जो जाता था और कहता था कि आपको पैसे नहीं देने हैं तो मत दो मैं कहीं से भी कमा लूंगा। आखिर थे तो मां-बाप ही, फिर उसकी बात मान लिया करते थे।

एक दिन अतुल फिर पिताजी से पैसे मांगने आया, पर इस बार पिताजी ने मन को कठोर करते हुए पैसे देने से मना कर दिया ताकि उसे पैसे की अहमियत समझ में आए और स्वयं कमाने की सोचे। बस फिर क्या था, दोनों में बहस छिड़ गई और अतुल ने घर छोड़कर जाने का फैसला कर लिया। पिताजी ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की पर अतुल नहीं माना और घर छोड़कर चला गया। अतुल के जाने से भावेश जी दुखी थे और कहीं ना कहीं उनके दिल में एक आशा थी कि अब बेटा एक न एक दिन स्वावलंबी बनकर घर वापस आएगा। बेटे का इंतजार करते-करते दो साल निकल गए। आज भावेश जी सेवानिवृत हो गए थे। मन में काफी उथल-पुथल चल रही थी कि अचानक बजी फोन की घंटी ने पूरा माहौल बदल दिया। उनके बेटे अतुल का अपने पिता को सेवानिवृत्ति की बधाई देने के लिए फोन था । भावेश जी ने बधाई स्वीकार कर फोन रख दिया था, पर मन बहुत विचलित था।

आखिर उनसे रहा नहीं गया और पुन: उसी नंबर पर फोन लगाया। उनके मन में कई सवाल थे। समझ में नहीं आ रहा था कि कहां से शुरुआत करें, क्या पूछें बेटा कैसा है,कहां पर है तू, ठीक तो है ना, जैसे सवालों की कतार लग गई। अतुल ने कहा कि पापा में बिल्कुल ठीक हूं और इस वक्त अमेरिका में हूं। यहां मेरी अच्छी नौकरी लग गई है। बहुत समय से आपसे बात करना चाहता था, पर हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। आज आपकी सेवा निवृत्ति पर बधाई देने के बहाने आपसे बात करने का साहस जुटा पाया हूं। आज तक मैंने आपको बहुत दुख दिया है, सही व्यवहार नहीं किया, बहुत फिजूल खर्च किए हैं। अब मैं सभी गलतियों का प्रायश्चित करना चाहता हूं। जब मैं यहां नौकरी के लिए भटक रहा था तब मुझे आपकी कही हुई सभी बातें याद आ रही थीं। काफी प्रयास के बाद मेरी नौकरी लगी तो मैंने पैसे की कीमत जानी। मैं हमेशा से ही गलत था। यह बात सुनकर भावेश जी की आंखें भर आई। अतुल ने कहा कि अब मैं आपकी पाई-पाई का भुगतान करना चाहता हूं। इस पर भावेश जी ने कहा कि बेटे हमें कुछ नहीं चाहिए बस तुम यहां आ जाओ। मेरी शेष रही जिंदगी में तुम्हारा साथ चाहिए। यह सुनकर अतुल काफी भावुक हो गया और अपनी नौकरी छोड़कर अपने माता-पिता के पास चला आया। पुरानी नौकरी के अनुभव के चलते उसे यहां अच्छी नौकरी मिल गई और सभी ने मिलकर नई शुरुआत की तथा हंसी खुशी रहने लगे।

आज के बदलते परिदृश्य में रिश्तों के मायने बदलने का प्रमुख कारण यह है कि हम आने वाली अपनी नई पीढ़ी को संघर्ष से लड़ने ही नहीं देना चाहते जिससे वो एक कंफ़र्ट ज़ोन में रहने के आदी हो जाते हैं। फिर यदि हम उस स्थिति को बदलने का प्रयास करते हैं तो रिश्ते नाज़ुक दौर में चले जाते हैं। सावित्री बाई फुले, डॉ. भीम राव अंबेडकर, सरदार पटेल, महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस, धीरु भाई अंबानी जैसे महान और सफल लोगों का जीवन संघर्ष की गाथाओं से भरा पड़ा है, संघर्षों ने ही उनके चरित्र निर्माण में अहम भूमिका निभाई थी। हम कंफ़र्ट ज़ोन में रखकर भावी पीढ़ी में चरित्र निर्माण नहीं कर सकते। अत: रिश्तों और समाज को मजबूत करने के लिए हमें भावी पीढ़ी को संघर्षों से बचाने की बजाय उनसे निपटने में सक्षम बनाना होगा।

“महाराष्ट्र की प्रभावशाली महिलाएं”

अंकिता दुबे
राजभाषा अधिकारी
राजभाषा विभाग
प्रधान कार्यालय

भारत परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध देश है। महाराष्ट्र भारत का तीसरा सबसे बड़ा राज्य होने के साथ-साथ भारत के सर्वाधिक प्रगतिशील राज्यों में से एक है। यहां कई महान लोगों का जन्म हुआ, जिन्होंने राज्य के साथ-साथ राष्ट्र को भी गौरान्वित किया है। महाराष्ट्र भारत की सबसे प्रभावशाली महिलाओं की जन्मभूमि एवं कर्मभूमि रहा है। इन उल्लेखनीय प्रतिभाओं ने अनेक कुरीतियों को तोड़ा, अन्याय के खिलाफ लड़ाई लड़ी और भावी पीढ़ियों के लिए लैंगिक समानता, शिक्षा और सामाजिक न्याय का मार्ग प्रशस्त किया। महाराष्ट्र की कुछ प्रभावशाली महिलाओं की सूची इस प्रकार है:

सावित्रीबाई फुले (1831-1897)- सावित्रीबाई फुले भारत की पहली महिला शिक्षिका थीं। वह एक समाज सुधारक, कवयित्री और नारी मुक्ति आंदोलन की प्रणेता भी थीं। सावित्री ने अपने पति

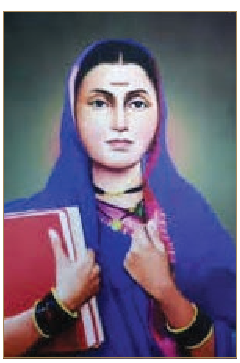

ज्योतिराव फुले के साथ महाराष्ट्र में महिलाओं के अधिकारों को बेहतर बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्हें भारत के नारीवादी आंदोलन की अग्रणी माना जाता है। सावित्रीबाई और उनके पति ने 1848 में भिडे वाडा पुणे में लड़कियों के लिए पहले आधुनिक शिक्षा वाले स्कूल की स्थापना की। उन्होंने जाति और लिंग के आधार पर लोगों के साथ भेदभाव और अनुचित व्यवहार को खत्म करने के लिए काम किया। उनका मानना था कि- “यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं, तो आप एक पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं।”

डॉ. आनंदीबाई जोशी (1865-1887)- आनंदीबाई जोशी का व्यक्तित्व महिलाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत है। 1886 में उन्होंने डॉक्टर बनने के अपने सपने को साकार रूप दिया। उन्होंने 1886 में एमडी की डिग्री हासिल की और “हिंदू आर्य लोकंमधील

प्रसूतिशास्त्र” पर शोध प्रबंध लिखा। वह ब्रिटिश भारत के तत्कालीन बॉम्बे प्रेसीडेंसी की पहली महिला बनीं जिन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका में पश्चिमी चिकित्सा में दो साल की डिग्री के साथ स्नातक किया। आनंदी ने मात्र 19 वर्ष की आयु में एमडी की डिग्री हासिल की थी। भारत वापस आने के पश्चात उन्हें कोल्हापुर रियासत के अल्बर्ट एडवर्ड अस्पताल में महिला वार्ड में प्रभारी चिकित्सक के पद पर नियुक्त किया गया।

पंडिता रमाबाई सरस्वती (1864-1955)- रामबाई एक समाज सुधारक, सामाजिक कार्यकर्ता, महान नारीवादी, कवि, शिक्षिका एवं ईसाई मिशनरी थीं, जिन्हें भारत में महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण के लिए उनके अग्रणी कार्य के लिए जाना जाता है। वह संस्कृत की प्रकांड विद्वान थीं और 22 वर्ष की आयु तक उन्होंने संस्कृत में महारत हासिल कर ली थी। वह कलकत्ता विश्वविद्यालय के संकाय द्वारा परीक्षा के बाद संस्कृत विद्वान के रूप में पंडिता और सरस्वती की उपाधियों से सम्मानित होने वाली पहली

महिला थी। वह 1889 के कांग्रेस सत्र की दस महिला प्रतिनिधियों में से एक थीं। उन्होंने “आर्य महिला समाज” और “शारदा सदन” जैसे संस्थानों की स्थापना की, जो महिलाओं को शिक्षा और आश्रय प्रदान करती थी।

दुर्गा खोटे (1905-1991)- दुर्गा खोटे एक प्रसिद्ध भारतीय अभिनेत्री थीं, जिन्होंने मूक फिल्मों से बोलती फिल्मों तक का सफर तय किया था। वे हिंदी फिल्मों की ''माँ'' के रूप में जानी जाती

हैं, क्योंकि उन्होंने कई फिल्मों में माँ की भूमिका निभाई थी। वह 50 से अधिक वर्षों तक हिंदी और मराठी सिनेमा के साथ-साथ थिएटर में भी सक्रिय रही। उन्होंने लगभग 200 फिल्मों और कई थिएटर प्रस्तुतियों में अभिनय किया। दुर्गा खोटे एक ऐसी महिला थीं जो हमेशा अपने करियर के बारे में जागरूक रहती थीं और उन्होंने फिल्मों में महिलाओं के लिए एक मजबूत भूमिका स्थापित करने में मदद की। उन्हें 1983 में भारतीय सिनेमा में उनके योगदान के लिए दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

लता मंगेशकर (1929-2022)- लता मंगेशकर एक प्रसिद्ध भारतीय पार्श्व गायिका थीं, जिन्हें प्यार से "स्वर कोकिला"

कहा जाता था। उनका आठ दशकों का कार्यकाल उपलब्धियों से भरा पड़ा है। उन्होंने 13 वर्ष की उम्र में अपनी गायिकी की शुरुआत की और लगभग 80 वर्षों तक सक्रिय रूप से संगीत के क्षेत्र में काम किया। लता मंगेशकर ने लगभग तीस से भी ज्यादा भाषाओं में फ़िल्मी और गैर-फ़िल्मी गाने गाये हैं। उनकी पहचान भारतीय सिनेमा में एक प्रमुख पार्श्वगायिका के रूप में रही है। वर्ष 2001 में इन्हें भारत के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया। वो कहती थी कि- "संगीत मेरी रगों में बसता है।"

शांता गोखले (14 अगस्त 1939)- शांता गोखले एक लेखिका, अनुवादक, सांस्कृतिक आलोचक और रंगमंच

इतिहासकार हैं। वे अंग्रेजी और मराठी में लिखती हैं। उन्होंने मराठी में दो उपन्यास "रीता वेंलिकर" और "त्या वर्षा" प्रकाशित किए हैं। दोनों ने वर्ष के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास के लिए महाराष्ट्र राज्य पुरस्कार जीता है। उन्होंने कई फिल्मों और वृत्तचित्रों के लिए पटकथाएँ लिखी हैं। गोखले मुंबई के टाइम्स ऑफ इंडिया में कला संपादक और फेमिना में उप- संपादक रह चुकी हैं।

सिंधुताई सपकाल (1948-2022)- सिंधुताई सपकाल एक भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता थीं जिन्हें अनाथ बच्चों की 'माई' के रूप में भी जाना जाता था।

सिंधुताई ने चौरासी गांवों के पुनर्वास के लिए लड़ाई लड़ी। उन्हें महाराष्ट्र की 'मदर टेरिसा' भी कहा जाता है। उन्हें महाराष्ट्र राज्य के अहिल्याबाई होल्कर पुरस्कार सहित कुल 273 राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। 2021 में उन्हें सामाजिक कार्य के लिए पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनका विचार था कि - "प्यार और करुणा सबसे गहरे घावों को भर सकती है।"

ताराबाई शिंदे (1850-1910) - ऐसे समय में जब महिलाओं को खुद को शिक्षित करने का अवसर भी नहीं दिया जाता था, ताराबाई एक उत्साही पाठक के रूप में सामने आईं, जो शास्त्रीय और आधुनिक साहित्य दोनों में पारंगत थीं। ताराबाई शिंदे

ने स्त्री पुरुष तुलना (महिलाओं और पुरुषों के बीच तुलना) नामक पुस्तक लिखी, जो भारत की पहली नारीवादी पुस्तकों में से एक थी। उन्होंने पितृसत्तात्मक मानदंडों और महिलाओं के साथ समाज के व्यवहार के पाखंड की निर्भीकता से आलोचना की। वे मानती थी कि- "जब महिलाएं इतना कुछ सहती हैं, तो उन्हें हीन क्यों समझा जाना चाहिए?"

विश्व कविता दिवस

विश्व कविता दिवस प्रतिवर्ष 21 मार्च को मनाया जाता है। विश्व कविता दिवस 2025 की थीम थी, "शांति और समावेशन का सेतु है कविता"। यूनेस्को ने 1999 में पेरिस में आयोजित अपने 30वें महासम्मेलन के दौरान विश्व कविता दिवस की घोषणा की थी। इसका उद्देश्य दुनियाभर में कविता के पठन, लेखन, प्रकाशन और शिक्षण को प्रोत्साहित करना है। यह दिन भाषाई विविधता को बढ़ावा देने और लुप्तप्राय भाषाओं को अभिव्यक्ति का मंच देने का कार्य भी करता है। इस अवसर पर कवियों को सम्मानित किया जाता है, कविता पाठ की मौखिक परंपराओं को पुनर्जीवित करने के लिए कविता को रंगमंच, नृत्य, संगीत, चित्रकला जैसी अन्य कलाओं से जोड़ने का प्रयास किया जाता है। कविता मानव अनुभव की अभिव्यक्ति और विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद को बढ़ावा देने वाला माध्यम है।

"हाँ मै बदल गयी हूँ"

पहले सा कुछ नहीं अब मुझमें,
क्यूंकि अब मैंने बोलना सीख लिया है,
सच और झूठ में फर्क करना सीख लिया है,
हाँ अब मै बदल गयी हूँ।

अब आंखो में नमी नहीं,
अपने पैरों पर खड़े होने का अभिमान रखती हूँ,
लोगों की कड़वी बातों को दिल पे नहीं लेती,
उनका जवाब देने का साहस रखती हूँ,
हाँ अब मैं बदल गयी हूँ।

अपने कर्तव्यों को याद रखती हूँ,
पर अब अपना हक लेना नहीं भूलती मैं,
अन्याय को अब ना सहूँगी,
प्रतिवादी जो हो गयी हूँ मैं
हाँ अब मै बदल गयी हूँ।

सपनों को उड़ान दे लेती हूँ,
ख्वाबो को अब पूरा कर लेती हूँ,
कर लेती हूँ अब खुद पे मेहनत,
क्योंकि आशावादी मैं हो गयी हूँ,
हाँ अब मैं बदल गयी हूँ।

निमिशा जायसवाल
विधि अधिकारी
एसएमईयूसी - इलाहाबाद
वाराणसी अंचल

खामोश दीवारें

दीवारों के कान हैं लेकिन,
सुनकर भी व्यक्त नहीं कर सकती, भावनाएँ अपनी।

दरवाज़ा बंद होते ही, कांप उठती हैं ये दीवारें,
मानों भांप लेती हों,
होने वाले संवादों की आक्रमकता।

लाचार सी गुहार लगाती हैं, मुझसे करती हैं गुज़ारिश,
कि कदम ना रखूं फ़िर कभी, मैं उनके इन विवश हिस्सों में।

हर एक अचूक वार पर, दो चीखें निकलती हैं,
एक मेरी और दूसरी इन बेबस दीवारों की।

उस विलाप की आवाज़, गूँजती है इनकी खामोशी में,
दीवारों के कान तो होते हैं, पर व्यक्त नहीं करती कभी कुछ।

चार दिवारी के अंदर मुमकिन है, ऐसी क्रूर गतिविधियाँ,
क्योंकि सुन तो लेती हैं दीवारें, पर बोल नहीं पाती कुछ।

ना जाने क्यों नहीं सुनाती, ये अपनी वेदनाओं की कथा,
जो मुझ पर हुए अन्यायों के,
अनगिनत किस्सों का बोझ ढो रही है।

शायद ये दीवारें भी मेरे जैसी, इक आस लगाए बैठी हैं,
एक खिड़की की आस, जो आवाज़ देगी,
हमारी चीखों भरी पुकार को,
बशर्ते पर्दा न डाल ले अपनी नज़रों पर,
वो आस भरी खिड़की।

पूजा अहूजा
अंकिता अहूजा की बहन
धनबाद आंचलिक कार्यालय

'कहानी औरत की'

नन्ही सी आई इस दुनिया में,
माँ की गोद थी सबसे प्यारी।
पापा की मैं थी राजकुमारी,
गुड़ियों संग बीती यारी।

धीरे-धीरे बड़ी हुई,
सपने देखे, राह चुनी।
मेहनत कर आगे बढ़ी,
नौकरी की, पहचान बनी।

फिर शादी का समय जो आया,
नया घर, नया जहाँ बसाया।
सबका दिल जीता, प्यार दिया,
पर खुद को भी कभी न भुलाया।

फिर माँ बनी, दुनिया बदली,
बच्चों में अपनी खुशियाँ मिलीं।
दिन-रात उनकी देखभाल में,
खुद को भी थोड़ा भूल चली।

बचपन से बुढ़ापे तक,
हर रूप में मैंने रंग भरा।
बेटी, बहू, माँ, औरत -
हर रिश्ता निभाया, पर ''मैं'' ना हारी।

शिवानी महत्ता
आंचलिक कार्यालय
चंडीगढ़

बंधनों को तोड़ती महिलाएं

न कोई बेड़ी, न कोई जंजीर,
अब न रोके कोई तक़दीर,
स्वप्न नया गढ़ने आई हैं,
बंधनों को तोड़ती महिलाएं।

सीमाओं को पार किया,
हर मुश्किल का संहार किया,
सदियों की बेड़ियां काट डाली,
अपने बलबूते नयी राह पर चली।

अब न घूंघट, न बंदिश होगी,
हर इच्छा अब अभिव्यक्त होगी,
शिक्षा का दीप जलाकर हम,
नवयुग की ओर बढ़े संग।

हाथों में शक्ति, आँखों में आग,
न रुकेंगी अब, न झुकेंगी भाग।
दुनिया बदलेगी इनके कदमों से,
हर क्षेत्र में परचम होगा इनका।

ममता भी है, संकल्प भी है,
कोमलता संग वज्र-कल्प भी है,
अबला नहीं, सबला कहलाएंगी,
हर सपने को सच कर दिखाएंगी।

नयी इबारत खुद लिखेंगी,
हर दर्द को शक्ति बनाएंगी,
आने वाला हर सवेरा गाए,
बंधनों को तोड़ती महिलाएं।

परमिंदर कौर
अधिकारी
राहों रोड शाखा
लुधियाना अंचल

भारतीय विरासत : यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल

प्रगति श्रीवास्तव
वरिष्ठ प्रबंधक
स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज नोएडा

भारत की सांस्कृतिक एवं वास्तुशिल्प विरासत एक ऐसी अद्वितीय माला है जिसमें विविधता के अनगिनत रत्न एकता के धागे में पिरोए गए हैं। भारत में, जिसे 'संस्कृति का भूखण्ड' कहा जाता है, अनेक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक समृद्धि के धरोहर स्थल हैं। यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल, विश्व भर में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक संपदा को नकारात्मक प्रभाव से संरक्षित रखने के लिए चुने गए स्थल हैं। भारत में भी युनेस्को द्वारा ऐसे स्थल

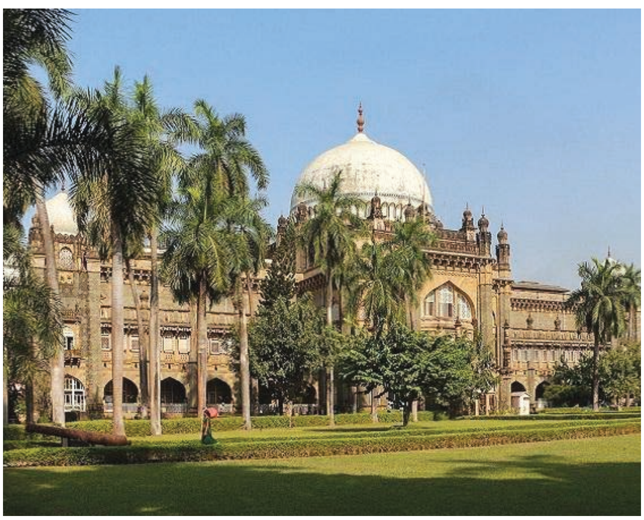

चुने गए हैं और उन्हें यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता दी गई है। ये स्थल भारतीय प्रतिष्ठा, संस्कृति, ऐतिहासिक विरासत और प्राकृतिक सौंदर्य को विनम्रता और गर्व के साथ दर्शाते हैं। हमारे भारत देश में कुल 43 यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल हैं जिसमे से सांस्कृतिक वर्ग में 35 हैं, प्राकृतिक वर्ग में 7 और मिश्रित वर्ग में 1 है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल की सूची में शामिल होने वाले कुछ स्थल निम्नलिखित हैं:

विक्टोरियन गोथिक और आर्ट डेको एनसेंबल, मुंबई

दक्षिण मुंबई में 'विक्टोरियन गोथिक और आर्ट डेको एनसेंबल' फोर्ट में स्थित 94 इमारतों का एक समूह है, जिसमें 19वीं सदी के विक्टोरियन रिवाइवल की सार्वजनिक इमारतें एवं 20वीं सदी के आर्ट डेको के अनेक निजी भवन शामिल हैं। इमारतों के इस समूह को 30 जून 2018 को मनामा, बहरीन में विश्व धरोहर समिति के 42वें सत्र के दौरान विश्व धरोहर स्थलों की सूची में जोड़ा गया था। ये इमारतें ओवल मैदान के नजदीक स्थित हैं, जिसे कभी एस्प्लेनेड के नाम से जाना जाता था। ओवल के पूर्व में विक्टोरियन गोथिक सार्वजनिक इमारतें हैं और पश्चिम में बैक बे रिक्लेमेशन और मरीन ड्राइव की आर्ट डेको इमारतें हैं। 19वीं सदी की विक्टोरियन गोथिक इमारतें मुख्य रूप से बॉम्बे हाई कोर्ट, मुंबई विश्वविद्यालय (फोर्ट कैंपस) और सिटी सिविल एवं सत्र न्यायालय (पुराने सचिवालय भवन में स्थित) हैं। इस खंड में मुंबई के ऐतिहासिक स्थलों में से एक, राजाबाई क्लॉक टॉवर भी स्थित है।

धोलावीरा: एक हड़प्पा शहर, गुजरात

गुजरात राज्य के कच्छ ज़िले की भचाऊ तालुका में स्थित 'धोलावीरा' एक पुरातत्व स्थल है। इसका नामकरण यहाँ से एक किमी दक्षिण में स्थित एक गाँव के नाम पर किया गया है। धोलावीरा में सिन्धु घाटी सभ्यता के अवशेष और खण्डहर पाए गए, जो इसे इस प्राचीन सभ्यता के सबसे बड़े ज्ञात नगरों में से एक बताते हैं। इस पुरातत्व स्थल को धोलावीरा गांव के निवासी शंभूदान गढ़वी ने 1960 के दशक के प्रारम्भ में खोजा था। भौगोलिक रूप से यह कच्छ के रण पर विस्तारित कच्छ मरुभूमि वन्य अभयारण्य के भीतर

खादिरबेट द्वीप पर स्थित है। यह प्राचीन नगर 47 हेक्टयर (120 एकड़) के चतुर्भुजीय क्षेत्रफल पर फैला हुआ था। नगर के उत्तर में मनसर जलधारा और दक्षिण में मनहर जलधारा है, जो मौसमी जलधाराएँ हैं। यह नगर लगभग 2650 ईसापूर्व में आबाद होना आरम्भ हुआ और 2100 ईपू के बाद यहाँ जनसंख्या घटने लगी। फिर सैंकड़ों वर्षों तक यह नगर वीरान रहा और फिर लगभग 1450 ईपू से यहाँ फिर से लोग बसने लगे। नए अनुसंधान बताते हैं कि यहाँ अनुमान से भी पहले लगभग 3500 ईपू से लोग बसना आरम्भ हो गए थे और फिर लगातार 1800 ईपू तक यहाँ आबादी बनी रही, धोलावीरा पांच हजार साल पहले विश्व के सबसे व्यस्त महानगरों में गिना जाता था। इस हड़प्पा कालीन शहर धोलावीरा को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में (2021 चीन में संपन्न यूनेस्को की ऑनलाइन बैठक में) शामिल किया गया। यह भारत का 40वां विश्व धरोहर स्थल है।

काकतीय रुद्रेश्वर (रामप्पा) मंदिर, तेलंगाना

रामप्पा मंदिर, जिसे रुद्रेश्वर (भगवान शिव) मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, दक्षिण भारत में तेलंगाना राज्य में स्थित एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है। यह वारंगल से 66 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह मुलुगु जिले के वेंकटपुर मंडल के पालमपेट गांव की घाटी में स्थित है। हालांकि अब यह एक छोटा सा गांव है लेकिन 13वीं और 14वीं शताब्दी के कालखंड में इसका एक गौरवशाली इतिहास रहा है। मंदिर के परिसर में स्थित एक शिलालेख के अनुसार इसका निर्माण वर्ष 1213 ईस्वी में काकतीय शासक गणपति देव के शासनकाल के दौरान उनके एक सेनापति रेचारला रुद्र देव ने करवाया था।

मंदिर एक शिवालय है, जहां भगवान रामलिंगेश्वर की पूजा की जाती है। कथित तौर पर, मार्को पोलो ने काकतीय साम्राज्य की अपनी यात्रा के दौरान इस मंदिर को 'मंदिरों की आकाशगंगा का सबसे चमकीला तारा' कहा था। रामप्पा मंदिर 6 फुट ऊंचे तारे के आकार के चबूतरे पर भव्य रूप से खड़ा है। गर्भगृह के सामने के कक्ष में कई नक्काशीदार स्तंभ हैं। मंदिर का नाम इसके मूर्तिकार रामप्पा के नाम पर रखा गया है, और शायद यह भारत का एकमात्र मंदिर है जिसका नाम उस शिल्पकार के नाम पर रखा गया है जिसने इसे बनाया था। मंदिर की मुख्य संरचना का निर्माण तो लाल बलुआ पत्थर से किया गया है, बाहर के स्तंभों को लौह, मैग्नीशियम और सिलिका से समृद्ध काले बेसाल्ट के बड़े पत्थरों से बनाया गया है। मंदिर पर पौराणिक जानवरों और महिला नर्तकियों या संगीतकारों की आकृतियों को उकेरा गया है, और यह 'काकतीय कला की उत्कृष्ट कृतियाँ हैं, जो महीन नक्काशी के लिए विख्यात हैं'। 25 जुलाई 2021 को, मंदिर को 'काकतीय रुद्रेश्वर (रामप्पा) मंदिर, तेलंगाना' के रूप में विश्व विरासत स्थल के रूप में शामिल किया गया।

होयसला के पवित्र समूह, कर्नाटक

होयसला वास्तुकला हिंदू मंदिर वास्तुकला में एक निर्माण शैली है जो 11वीं और 14वीं शताब्दी के बीच होयसला साम्राज्य के शासन के दौरान विकसित हुई थी। 13वीं शताब्दी में होयसला साम्राज्य का प्रभाव अपने चरम पर था, जब इसने दक्षिणी दक्कन के पठार क्षेत्र पर अपना दबदबा कायम किया था। इस युग के दौरान बनाए गए बड़े और छोटे मंदिर होयसला स्थापत्य शैली के उदाहरण हैं, जिनमें बेलूर में चेन्नाकेशव मंदिर, हलेबिदु में होयसलेश्वर मंदिर और सोमनाथपुरा में केशव मंदिर शामिल हैं। इन तीनों मंदिरों को 2023 में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल का दर्जा दिया गया था। 12वीं शताब्दी के मध्य में होयसल की स्वतंत्रता से पहले निर्मित मंदिरों में पश्चिमी चालुक्यों का महत्वपूर्ण प्रभाव देखने को मिलता है, जबकि बाद के मंदिरों में पश्चिमी चालुक्य वास्तुकला की कुछ प्रमुख विशेषताएं बनी हुई हैं, लेकिन उनमें अतिरिक्त आविष्कारशील सजावट और अलंकरण हैं, जो होयसल कारीगरों की अद्वितीय विशेषताएं हैं।

होयसल वास्तुकला को प्रभावशाली विद्वान एडम हार्डी ने कर्नाटक द्रविड़ परंपरा के हिस्से के रूप में वर्गीकृत किया है, जो दक्कन में द्रविड़ वास्तुकला के भीतर एक प्रवृत्ति है जो दक्षिण की तमिल शैली से अलग है। परंपरा के लिए अन्य शब्द वेसर और

चालुक्य वास्तुकला हैं, जो प्रारंभिक बादामी चालुक्य वास्तुकला और पश्चिमी चालुक्य वास्तुकला में विभाजित हैं जो होयसल से तुरंत पहले की है। पूरी परंपरा लगभग सात शताब्दियों की अवधि को कवर करती है, जो 7वीं शताब्दी में बादामी के चालुक्य वंश के संरक्षण में शुरू हुई, 9वीं और 10वीं शताब्दी के दौरान मान्यखेत के राष्ट्रकूटों और 11वीं और 12वीं शताब्दी में बसवकल्याण के पश्चिमी चालुक्यों (या बाद के चालुक्यों) के तहत आगे विकसित हुई। इसका अंतिम विकास चरण और एक स्वतंत्र शैली में परिवर्तन 12वीं और 13वीं शताब्दी में होयसल के शासन के दौरान हुआ। मंदिर के स्थानों पर प्रमुखता से प्रदर्शित मध्ययुगीन शिलालेख मंदिर के रखरखाव के लिए किए गए दान, अभिषेक के विवरण और कभी-कभी, यहां तक कि वास्तुशिल्प विवरणों के बारे में जानकारी देते हैं।

मोइदम - अहोम राजवंश की टीला-दफन प्रणाली , असम

पूर्वोत्तर भारत में ताई-अहोम द्वारा बनाया गया एक शाही टीला दफन स्थल पूर्वी असम में पाटकाई पर्वतमाला की तलहटी में स्थित है। इन दफन टीलों को ताई-अहोम द्वारा पवित्र माना जाता है और उनकी अनूठी अंत्येष्टि प्रथाओं को दर्शाता है।

ताई-अहोम लोग 13 वीं शताब्दी में असम पहुंचे, चराइदेव को अपने पहले शहर और शाही नेक्रोपोलिस की साइट के रूप में स्थापित किया। 600 वर्षों के लिए, 13 वीं से 19 वीं शताब्दी सीई तक ताई-अहोम ने पवित्र भूगोल बनाने के लिए पहाड़ियों, जंगलों और पानी जैसे प्राकृतिक तत्वों का उपयोग करके मोइदम, या 'होम-फॉर-स्पिरिट' का निर्माण किया।

ताई-अहोम ने अपने राजाओं को दिव्य मानते हुए शाही दफन के लिए मोइदम के निर्माण की एक अलग अंत्येष्टि परंपरा विकसित की। इन टीलों को शुरू में लकड़ी के साथ और बाद में पत्थर और जली हुई ईंटों के साथ बनाया गया था। शाही दाह संस्कार अनुष्ठान औपचारिक रूप से आयोजित किए गए थे, जो ताई-अहोम समाज की पदानुक्रमित संरचना को दर्शाते थे।

बेटियाँ

पढ़ तो गईं पर बची नहीं बेटियाँ,
कभी निर्भया, कभी मौमिता,
निगल लिया रावण ने,
पढ़ तो गईं पर बची नहीं बेटियाँ,
कहाँ जाएं बेटियाँ?
कभी भ्रूण में कभी समाज में,
मारी गई बेटियाँ,
कभी दहेज ,कभी घरेलू हिंसा में,
जलायी गयी बेटियाँ,
कभी दुष्कर्म, कभी एसिड अटैक में,
कुचली गई बेटियाँ,
पढ़ तो गईं पर बची नहीं बेटियाँ,
दरिंदों ने जिन्हें भयभीत किया,
बचा न सकी अपनी आबरू,
पढ़-लिख कर देश सेवा की खातिर,
सौंप दिए अपने दिन-रात,
समाज की खातिर,
पढ़ तो गईं पर बची नहीं बेटियाँ,
पर काम ना आयी उसकी शिक्षा,
मान न रहा उसकी सेवा का,
ऐसी ही कितनी शर्मसार हुई,
रूह नहीं काँपी दरिंदों की,
पढ़ तो गयी पर बची नहीं बेटियाँ,
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ।

प्रीति कुमारी
प्रबंधक
कांठीटांड़ शाखा
राँची अंचल

“नववर्ष मनाने की भारतीय परम्पराएँ”

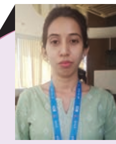

बीना शर्मा
राजभाषा अधिकारी
राजभाषा विभाग
प्रधान कार्यालय

भारत में सभ्यता की उत्पत्ति से लेकर वर्तमान समय तक विभिन्न कालों में अनेक संस्कृतियां फलती-फूलती रही हैं, इन विकसित होती हुई संस्कृतियों में अलग-अलग समाज एवं समुदायों ने अपने धर्म एवं परंपराओं को मजबूत करने हेतु विभिन्न अवसरों पर त्योहार एवं उत्सवों को मनाने का एक क्रम प्रारंभ किया। रवींद्रनाथ ठाकुर का कथन है कि त्योहार समुदाय की आत्मा होते हैं-ये जीवन के गीतों को साथ मिलकर गाने-गुनगुनाने का माध्यम बनते हैं। विभिन्न समाज, समुदाय, जातियां एवं जनजातियां अपने-अपने देवी-देवताओं को समर्पित त्योहार एवं उत्सव मनाते हैं। वर्तमान में भारत को सांस्कृतिक विविधता वाला देश ऐसे ही नहीं कहा जाता है यहां प्रत्येक कुछ मील पर भाषा, खान-पान, रहन-सहन बदल जाते हैं वैसे ही त्योहार एवं उत्सव भी हैं, किसी एक राज्य में किसी उत्सव को मनाने का तरीका अलग है तो दूसरे राज्य में अलग तरीके से मनाया जाता है। किसी अज्ञात कवि ने लिखा है-

‘ऐसा मेरा देश जहां कदम-कदम पर प्रकृति बदले रंग,
ऐसा मेरा परिवेश जहां संस्कृति के अलग-अलग हैं ढंग’

भारत की सांस्कृतिक विविधता के कारण, देश के लोग सौर और चंद्र कैलेंडर प्रणाली दोनों के अनुसार नया वर्ष मनाते हैं। हिंदू कैलेंडर, जो चंद्रमा की गति पर आधारित है। जबकि अन्य धार्मिक नए साल, सूर्य की गति अनुसार, इस्लामिक नव वर्ष की तरह होते हैं। अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्रों में नए साल का उत्सव मनाने की संस्कृति और परंपराएं अनूठी हैं। मुख्य रूप से नया वर्ष फसलों के पकने के समय के अनुसार मनाया जाता है। आइए, हम देश के विभिन्न हिस्सों में मनाए जाने वाले प्रमुख नए साल के उत्सवों की बात करते हैं।

➢ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (संवत्सरारंभ)

उत्तर भारत में नव संवत्सर की शुरुआत के तौर पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को मनाया जाता है। इस दिन लोग पूजा, व्रत और धार्मिक अनुष्ठान करते हैं। इस दिन को विक्रम संवत की शुरुआत के रूप में जाना जाता है, विक्रम संवत की परंपरा महाराज विक्रमादित्य के काल में शुरू हुई थी।

➢ पोहेला बोइशाख - पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल एक और राज्य है जो अलग तरह से नया साल मनाता है। पोइला या पोहेला बोइशाख, वैसाख का पहला दिन होता है, जो बंगाली नव वर्ष होता है। आप पूरे राज्य में सांस्कृतिक उत्सव देखेंगे, जिसमें बंगाली लोग खरीदारी और संगीत कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। शांतिनिकेतन अपने नोबोबोर्शो (नए साल) त्योहारों के लिए प्रसिद्ध है।

➢ बैसाखी - पंजाब

बैसाखी पूरे उत्तर भारत में मनाया जाने वाला सबसे बड़ा फसल उत्सव है। पांच नदियों से सिंचित भूमि पंजाब में बैसाखी का विशेष महत्व है। वैसाख महीने के पहले दिन को याद करते हुए, पंजाब का सिख समुदाय इस दिन को सिख खालसा के गठन के रूप में भी मनाता है। यह मुख्य रूप से खालसा के जन्मस्थान और अमृतसर में स्वर्ण मंदिर में मनाया जाता है।

➢ जूड शीतल - बिहार, झारखंड

मैथिली नव वर्ष के रूप में भी जाना जाता है, यह बिहार, झारखंड और यहां तक कि नेपाल में मैथिली लोगों द्वारा मनाया जाता

है। मैथिली नव वर्ष आमतौर पर ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार 14 अप्रैल को मनाया जाता है।

➢ बोहाग बिहू - पूर्वोत्तर राज्य

रंगाली बिहू के नाम से भी जाना जाने वाला बोहाग बिहू असम में बैसाखी और पुथांडु के दिन भी मनाया जाता है। नई फसल का जश्न मनाने के लिए खूब सारी मिठाइयाँ बनाई जाती हैं, जिन्हें परिवार और दोस्तों के बीच बांटा जाता है और उपहारों का आदान-प्रदान किया जाता है। बोहाग बिहू कई अलग-अलग परंपराओं के साथ तीन दिनों तक मनाया जाता है। बिहू नृत्य लोगों के लिए उत्सव का एक रूप है

➢ गुड़ी पड़वा - महाराष्ट्र

गुड़ी पड़वा चैत्र महीने का पहला दिन है और इसे महाराष्ट्र में नए साल के रूप में मनाया जाता है। गुड़ी, रेशमी साड़ी या कपड़े से बनी एक सुंदर सजावट है जिसे ऊपर से 'लोटा' से बांधा जाता है और फिर इसे नीम और आम से बनी मिठाइयों और मालाओं से सजाया जाता है। यह दिन छत्रपति शिवाजी महाराज की अपने दुश्मनों पर जीत और शालिवाहन की शकों पर जीत का प्रतीक है।

➢ उगादि - कर्नाटक, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश

उगादी या युगादी आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक का नववर्ष उत्सव है। यह इन क्षेत्रों में हिंदू चंद्र-सौर कैलेंडर के चैत्र महीने के पहले दिन मनाया जाता है। उगादी नई शुरुआत का त्योहार है, इसलिए लोग नए कपड़े खरीदते हैं और दोस्तों और परिवार के साथ खूब सारा अच्छा खाना खाते हैं। पारंपरिक मिठाइयाँ और 'पचड़ी' (मीठा सिरप) - कच्चे आम और नीम के पत्तों से बनाया जाता है - उगादी भोजन के साथ परोसा जाता है।

➢ जमशेदी नवरोज़

नवरोज़ ईरानी नववर्ष है, जिसे दुनिया भर में कई जातीय-भाषाई समूह मनाते हैं। भारत में, पाटेती के अगले दिन, पारसी नवरोज़ मनाते हैं।

➢ विशु - केरल

विशु उत्सव केरल की समृद्ध भूमि में फसल की कटाई की शुरुआत का प्रतीक है। यह रोशनी और आतिशबाजी से भरा त्योहार है। दिन की शुरुआत फसल के फलों, सब्जियों और मौसमी फूलों को शीशे के सामने सजाकर की जाती है। इस व्यवस्था को विशु कानी कहा जाता है। इस दिन, भक्त प्रार्थना के लिए गुरुवायुर कृष्ण मंदिर और सबरीमाला अय्यप्पन मंदिर भी जाते हैं।

➢ पुथांडु- तमिलनाडू

तमिल लोगों द्वारा पुथांडु का त्योहार बहुत ही महत्वपूर्ण और शुभ माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस विशेष दिन से भगवान ब्रह्म ने सृष्टि का निर्माण शुरू किया था। साथ ही इस तिथि पर भगवान इंद्र स्वयं धरती पर लोगों के कल्याण के लिए उतरे थे। माना जाता है कि इस दिन पर पूजा करने से व्यक्ति को शुभ फलों की प्राप्ति होती है। पुथांडु को तमिल लोग बड़े ही उत्साह के साथ मनाते हैं। इस दिन को पुथुरूषम एवं वरुषा पिरप्पु के नाम से भी जाना जाता है। इस खास मौके पर लोग अपने घर की अच्छे से साफ-सफाई करते हैं। साथ ही घर को रंगोली से सजाया जाता है, जिसमें चावल के आटे का भी उपयोग किया जाता है। मान्यताओं के अनुसार ऐसा करने से जो सौभाग्य आता है। इसके बाद लोग पारंपरिक वस्त्र धारण करके अपने आराध्य देव की पूजा-अर्चना करते हैं। साथ ही मंदिर जाकर भी भगवान का आशीर्वाद प्राप्त किया जाता है। इस दिन पर चावल की खीर का भोग लगाने का विशेष महत्व माना गया है। इसी खीर को प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है। इस दिन शाकाहारी भोजन ही किया जाता है।

➢ गुजरात- नवरेह

गुजराती नवरेह को बेस्तु वर्ष के नाम से भी जाना जाता है, गुजरात में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण त्योहार है। यह हिंदू चंद्र कैलेंडर के अनुसार, कार्तिक महीने में दिवाली से अगले दिन गोवर्धन पूजा के दिन मनाया जाता है, जो भगवान श्री कृष्ण की उस कहानी से जुड़ा है जब उन्होंने गोवर्धन पर्वत को उठा कर ब्रजवासियों को भारी बारिश से बचाया था।

➢ **मुहर्रम**

मुहर्रम माह से इस्लामिक नववर्ष की शुरुआत होती है। यह हिजरी कैलेंडर का पहला महीना होता है। इस्लामिक नववर्ष को सामान्यत: हिजरी नववर्ष या इस्लामी नववर्ष कहा जाता है। इस्लामिक नववर्ष की गणना हिजरत (पैगंबर मोहम्मद की मक्का से मदीना की यात्रा) की तिथि से की जाती है।

➢ **1 जनवरी**

ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार प्रत्येक वर्ष 1 जनवरी को नव वर्ष की शुरुआत होती है। आज इसे दुनियाभर के सभी समुदायों द्वारा मनाया जाता है। ग्रेगोरियन कैलेंडर की शुरुआत पोप ग्रेगोरी XIII द्वारा 1582 में की गई थी, इसे पूर्ववर्ती जूलियन कैलेंडर को सुधारकर बनाया गया था, इसमें प्रमुख संशोधन लीप के वर्ष को जोड़ना था।

भारत में नववर्ष विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है। ये नववर्ष सांस्कृतिक विविधता का प्रतिनिधित्व करते हैं और विभिन्न समुदायों की परंपराओं को दर्शाते हैं। अगर भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के दर्शन करने है तो भारत के त्योहारों में इसकी झलक देख सकते हैं।

उपरोक्त सभी देशी नववर्ष विभिन्न तिथियों और परंपराओं के साथ मनाए जाते हैं। ये उत्सव केवल नए साल की शुरुआत का संकेत मात्र नहीं हैं, बल्कि कृषि, मौसम परिवर्तन और सांस्कृतिक पहचान से भी गहराई से जुड़े हैं, जैसे पंजाब में बैसाखी रबी की फसल की कटाई के अवसर पर, महाराष्ट्र में गुढी पड़वा, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में उगादी, तमिलनाडु में पुथांडु, केरल में विषु, और बंगाल में पोइला बोइशाख के रूप में नववर्ष मनाया जाता है।असम में बिहू और उत्तर भारत के कुछ भागों में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नववर्ष का दिन माना जाता है। इन उत्सवों की महत्ता न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक है, बल्कि ये सामाजिक एकता, पारिवारिक मेल-मिलाप और परंपराओं के संरक्षण का भी माध्यम हैं। देशी नववर्ष उत्सव हमें अपनी जड़ों से जोड़े रखते हैं और क्षेत्रीय विविधताओं को सम्मान देते हुए राष्ट्रीय एकता को भी बल देते हैं।

पल-पल

ऐसा क्या था, जो मैं पल-पल रोई,
थोड़ा अपनापन, थोड़ा प्रेम जताते,
समझते इतना ही, कि मैं हूँ तुम्हारी,
ऐसा क्या था, जो मैं पल पल रोई।

प्रेम है वहीं जहां कोई स्वार्थ नहीं,
फिर भला कैसे क्रोध करे कोई,
ऐसा क्या था, जो मैं पल पल रोई।

छोड़ मुझे न जाओ, यही विनती रही,
तुम देख ना पाये, क्या टूटा तुम्हारे पीछे,
ऐसा क्या था, जो मैं पल पल रोई।

अब वो पल भी नहीं आ पायेगा,
जो तुम फिर मुझे पाओगे,
मैं नदी तो नहीं कि बहती ही जाऊं,
मैं धरती भी नहीं की सब सह जाऊं,
ऐसा क्या था, जो मैं पल पल रोई।

दूर से निहारता आकाश भी,
वर्षा की बूंदों से छू लेता है धरती को,
तुम पास रह कर भी नहीं छू सके मेरे मन को,
ऐसा क्या था, जो मैं पल पल रोई।

न थी मैं इस पार, न उस पार,
फिर वह सैलाब क्यों मुझे बहा ले गया,
ऐसा क्या था, जो मैं पल पल रोई।

स्मृतिलता कुमारी
गुलज़ारबाग़ शाखा
पटना अंचल

एक यात्रा ऐसी भी...

हेना परवेज़
अधिकारी
बीटीपीएस शाखा
बोकारो

यात्राएँ हमें नए स्थान तथा नए लोगों से मिलने का सुनहरा अवसर प्रदान करती हैं। पर्यटन के रूप में यात्राएं रोमांच से भरी होती हैं, लेकिन इन यात्राओं से अलग, अंतरिक्ष यात्रा अपने आप में एक असाधारण अनुभव होता है जो साहसिक एवं प्रतिभाशाली व्यक्तियों को ही सुलभ होता है। ऐसी ही एक अनोखी यात्रा पर भारतीय-अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स भी गई थीं जो स्वयं में प्रेरणादायक और साहसिक है। उनका सफर केवल एक अंतरिक्ष यात्री के रुप में ही नहीं, अपितु दुनियाभर की महिलाओं के लिए भी किसी प्रेरणा से कम नहीं है। वे असंभव एवं अनंत की तीर्थयात्री हैं, जो सितारों के मंदिर में पवित्र अग्नि की तरह पृथ्वीवासियों की जिज्ञासा की लौ प्रज्ज्वलित कर पाई हैं। अंतरिक्ष यात्रा... केवल खगोल पिंडों की खोज के बारे में नहीं है; यह अपरिचित स्पेस में मनुष्य की संभावनाओं को खोजने के बारे में भी है।

“नक़्शे में थे नहीं कहीं, रास्ते मेरे हो चले वही,
हर मोड़ पे साया कोई, बोले मेरे भीतर से ही,
न थी मंज़िल कोई, न कारवाँ ही था,
फिर भी चली जैसे किसी ने पुकारा हो वहां,
यान में रहते हुए, सितारों में बहते हुए,
हर अंजाना अफ़साना, एक आईना बनता गया,
मैं खुद से ही थी मिलने चली, ये राज़ भी खुलता गया।
और अब जब देखती हूँ ऊपर, तो समझ आता है यही,
सफ़र अंतरिक्ष का नहीं, थी भीतर उतरने की रस्म ही।”

सुनीता विलियम्स जिनका जन्म 19 सितम्बर 1965 को अमेरिका के ओहियो राज्य में स्थित यूक्लिड नगर में हुआ था। वह एक बहुत ही प्रतिभाशाली छात्रा थीं और उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय स्कूल से प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने ‘बोस्टन विश्वविद्यालय’ से ‘नॉटिकल आर्किटेक्चर’ और ‘एविएशन इंजीनियरिंग’ की शिक्षा ग्रहण की। सुनीता का पालन-पोषण एक ऐसे परिवार में हुआ था, जहाँ शिक्षा और अनुशासन का अत्यधिक महत्व था। उनके माता-पिता ने उन्हें हमेशा अपनी पूरी क्षमता का उपयोग कर सपनों को साकार करने हेतु कठिन परिश्रम करने के लिए प्रोत्साहित किया।

1998 में नासा से जुड़ने के बाद, वह कई कठिन शारीरिक और मानसिक परीक्षणों से गुजरी जो स्वयं में एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी, खासकर ऐसे समय में जब महिलाएँ विज्ञान और प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में अग्रसर होने की शुरुआत ही कर रही थीं। सुनीता विलियम्स की पहली अंतरिक्ष यात्रा 2006 में हुई थी, जब उन्हें नासा के ‘एसटीएस-116’ मिशन के लिए चयनित किया गया था। यह मिशन अमेरिकी अंतरिक्ष शटल ‘डिस्कवरी’ के दौरान लॉन्च किया गया था और इसका मुख्य उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) को स्थापित करना था। सुनीता विलियम्स इस मिशन में फ्लाइट इंजीनियर के रुप में शामिल हुईं।

सुनीता विलियम्स की दूसरी अंतरिक्ष यात्रा 2012 में हुई थी। इस मिशन का नाम ‘एसटीएस-118’ था जो कि नासा के शटल कार्यक्रम का हिस्सा था। इस दौरान उन्होंने अंतरिक्ष में रहकर कई अहम प्रयोग एवं अनुसंधान किए। विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष अनुसंधान में लगातार योगदान देते हुए एक बार फिर जून 2024 में वह अंतरिक्ष यात्रा पर निकल पड़ी। उनका मिशन, जो मूल रूप से बोइंग के स्टारलाइनर अंतरिक्ष यान पर आठ दिवसीय परिक्षण उड़ान के रूप में था, कई तकनीकी असफलताओं की वजह से 286 दिनों का हो गया। नासा ने अक्टूबर 2011 में बोईंग को स्पेसक्राफ्ट बनाने के लिए हरी झंडी दी। स्टारलाइनर बनते-बनते 6 साल लग गए। 2017 में यह तैयार हुआ और 2019 तक इसके परिक्षण होते रहे लेकिन इन उड़ानों में कोई इंसान शामिल नहीं था।

इसकी मानवयुक्त उड़ान साल 2017 में तय की गई थी परन्तु कई तकनीकी दिक्कतों के मद्देनजर यह उड़ान टलती रही। अंततः 6 मई 2024 को इसकी उड़ान स्पेसक्राफ्ट की सारी दिक्कतों को

दूर कर निश्चित की गई। परन्तु ऑक्सीजन वाल्व में दिक्कत के कारण लॉन्चिंग फिर से टल गई। आखिरकार 5 जून 2024 को सुनीता विलियम्स और बैरी बुच विलमोर को लेकर स्पेसक्राफ्ट अंतरिक्ष के लिए रवाना हुआ। 8 दिन बाद 13 जून को इन्हें वापस आना था लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। 286 दिनों तक अंतरिक्ष में रहने के बाद, सुनीता विलियम्स ने न केवल विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में योगदान दिया है, बल्कि उन्होंने यह भी साबित किया है कि महिलाएँ किसी भी क्षेत्र में अपेक्षानुसार साहस का परिचय दे सकती हैं। अगर एक स्त्री दृढ़ निश्चय कर ले तो कोई भी कार्य उसके लिए असंभव नहीं है।

सुनने में यह जितना आसान लगता है यह यात्रा उतने ही जोखिमों से भरी हुई थी। अंतरिक्ष से धरती पर कदम रखने में सुनीता विलियम्स को करीब 17 घंटे का वक्त लगा था। फ्लोरिडा में स्प्लैशडाउन के क्रम में जब सुनीता का ड्रैगन कैप्सूल धरती पर लैंड कर रहा था, तब पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करते वक्त इसकी रफ़्तार 17000 मील प्रति घंटा थी। वायुमंडल में एंट्री करने के बाद स्पेसक्राफ्ट का टेम्परेचर करीब 2000° से. तक पहुँच गया था। इतना ही नहीं, ड्रेगन कैप्सूल जब धरती के वायुमंडल में आया तो कुछ वक्त के लिए स्पेसक्राफ्ट से सिग्नल छूट गया था और कम्युनिकेशन टूट गया था। जब समंदर के ऊपर कैप्सूल आया तो बारी-बारी कर पैराशूट खुले और नासा की टीम ने रस्सी के सहारे कैप्सूल को सेफ्टी नाव पर ला सुनीता विलियम्स की घर वापसी कराई। इस दौरान उन्होंने पृथ्वी की 4576 बार परिक्रमा की और स्प्लैशडाउन के समय तक 12 करोड़ 10 लाख मील की यात्रा तय की।

सुनीता विलियम्स की यह अंतरिक्ष यात्रा कोई साधारण यात्रा नहीं है, बल्कि प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। उन्होंने न केवल अंतरिक्ष विज्ञान में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है बल्कि युवाओं और महिलाओं को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अग्रसर होने के लिए प्रेरित किया है।

यह असाधारण यात्रा सभी के लिए प्रेरणास्रोत है जिसने यह साबित कर दिया कि अगर किसी के भीतर दृढ़ इच्छा शक्ति हो तो कोई भी मुश्किल राह उसे अपने लक्ष्य तक पहुँचने से नहीं रोक सकती। पुरुष हो या महिला वे हर क्षेत्र में दृढ़ निश्चय से कोई भी मुकाम हासिल कर सकते हैं। यात्रा चाहे कोई भी हो यह हमें शारीरिक एवं मानसिक रुप से सुदृढ़ बनाती है तथा नए कौशल और ज्ञान को सीखने का मौका देती है। लेकिन कुछ ही लोगों को सुनीता विलियम्स की तरह अंतरिक्ष यात्रा का सौभाग्य प्राप्त होता है।

नए युग की नई उड़ान

हां, आधुनिक युग की नारी हैं हम,
हमारे अस्तित्व का संघर्ष, नहीं है कम,
भले ही पथ में हैं बाधाएं अनेक,
उज्ज्वल भविष्य की राह पर बढ़ रहे कदम।

स्वाभिमान और निडरता यही हमारी पहचान,
भय, निराशा और विफ़लता से रहे हम अंजान,
आत्मविश्वास तथा लगन हैं हमारे ब्रह्मास्त्र,
चन्नम्मा और झांसी रानी सी है हम बलवान।

चाहे हो महामहीम द्रौपदी मुर्मू,
या हो फिर नायका की फाल्गुनी नायर,
फौलाद सी मुक्केबाज़ दबंग मेरी कॉम,
ये महिलाएं हैं हमारी "लाइव वारियर"।

कई पायदाने स्त्री-शक्ति की,
दिखा चुके हैं जिनकी झांकी,
रक्षा, शिक्षा, साहित्य हो, या हो खेल,
फिर भी अनेक क्षेत्र हैं बाकी।

देश की प्रगति में देंगे हम योगदान,
हर मुश्किल करेंगे हम आसान,
चाहे लाख चुनौतियां हो पथ में,
बनेंगे हम देश की आन, बान, शान।

आओ सब मिलकर एक नई दुनिया बनाएं,
सुंदर परंपरा के गीत हम गाएं,
भारत की शान बढे दुनियाभर में
ये हैं हमारी, शुभकामनाएं।

आफ़रीन पिंजार
धारवाड शाखा
हुब्ब्ली धारवाड़ अंचल

पुस्तक समीक्षा

'टोकरी में दिगन्तः थेरीगाथा'

सुश्री निधि कुमारी
वरिष्ठ प्रबंधक
ऋण निगरानी विभाग
नवी मुंबई आंचलिक कार्यालय

बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में रहने वाली 'अनामिका' एक मशहूर साहित्यकार हैं। उन्होंने हिंदी साहित्य के काव्य संग्रह में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। जिनमें अनुष्टुप, दूब-धान, खुरदरी हथेली, पानी को सब याद था एवं टोकरी में दिगन्त: थेरीगाथा आदि प्रमुख हैं। 2011 में प्रकाशित उनके हिंदी कविता संग्रह 'टोकरी में दिगन्त: थेरीगाथा' को वर्ष 2020 के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। अनामिका हिंदी में कविता संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार पाने वाली देश की पहली महिला साहित्यकार हैं।

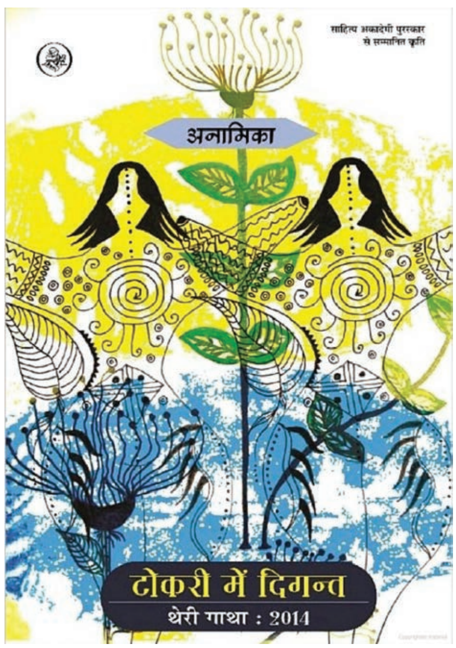

"टोकरी में दिगंत: थेरीगाथा 2011" समकालीन हिंदी की प्रसिद्ध कवयित्री अनामिका का एक अत्यंत महत्वपूर्ण काव्य-संग्रह है, जिसे उन्होंने बौद्ध भिक्षुणियों द्वारा रचित 'थेरीगाथा' से प्रेरित होकर लिखा है। यह संग्रह केवल स्त्री अनुभवों की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि इतिहास की पृष्ठभूमि में दबी, अनसुनी, अवहेलित स्त्री आवाज़ों को पुनर्जीवित करने का कार्य करता है।

थेरीगाथा बौद्ध साहित्य का एक हिस्सा है, जिसमें प्रारंभिक बौद्ध भिक्षुणियों द्वारा रचित गाथाएँ संकलित हैं। ये गाथाएँ महिलाओं के आत्मानुभव, मुक्ति की चाह और आध्यात्मिक संघर्ष को प्रकट करती हैं। ये स्त्रियाँ - जो कभी माँ, पत्नी, पुत्री रही थीं - उन्होंने सामाजिक बंधनों को त्यागकर आत्म-ज्ञान की ओर कदम बढ़ाए। कवयित्री प्राचीन बौद्ध भिक्षुणियों की आत्मकथाओं को आधुनिक स्त्रियों के संघर्ष से जोड़ती हैं। यह कविता इतिहास और वर्तमान के बीच एक पुल की तरह है - जहाँ परंपरा से विद्रोह जन्म लेता है और भविष्य की राह बनती है।

यह संग्रह स्त्री मुक्ति की आकांक्षा का घोष है। यह कविता उन आवाज़ों को सामने लाती है जिन्हें इतिहास की तथाकथित 'मुख्यधारा' ने नजरअंदाज़ किया। इस संग्रह की स्त्रियाँ समाज के ढांचों से टकराती हैं, पराजित नहीं होतीं। वे प्रश्न करती हैं, विरोध करती हैं और अंतत: खुद को परिभाषित करती हैं।

यह संग्रह पितृसत्तात्मक पाठों का स्मरण भी है। जिन स्त्रियों को धर्म, समाज या परिवार ने दबाया - अनामिका उन्हें 'नायक' बनाकर प्रस्तुत करती हैं। यह पुनर्पाठ न केवल साहित्यिक दृष्टि से बल्कि सामाजिक रूप से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस काव्य संग्रह के कुछ मूल तत्व निम्नलिखित है-

प्राचीनता का स्मरण:

थेरीगाथा की मूल भावना-मुक्ति, संन्यास, और स्त्री की

आत्मनिर्भरता-को यह संग्रह आधुनिक नारीवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है। जहाँ मूल गाथाएँ आध्यात्मिक मोक्ष पर केंद्रित हैं, वहीं 'टोकरी में दिगंत' इन्हें समकालीन सामाजिक बंधनों (जैसे लैंगिक असमानता, पितृसत्ता) से मुक्ति के प्रतीकों से जोड़ता है।

आधुनिक हिंदी काव्य से तुलना: निराला की 'वरदानी मुक्ति' या अलोकधन्वा के 'कविता से हो रही बातचीत' जैसी रचनाएँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अस्तित्ववाद को उजागर करती हैं। इस संग्रह में भी 'टोकरी' (सीमाएँ) और 'दिगंत' (अनंत की चाह) के बीच द्वंद्व आधुनिक मनुष्य की विडंबना को दर्शाता है।

शिल्प और भाषा:

पारंपरिक से प्रयोग की ओर: थेरीगाथा की सरल, गेय पद्यात्मकता के स्थान पर इस संग्रह में मुक्तछंद और बिंब-विधान की प्रधानता है। उदाहरणत: "टोकरी" जैसे प्रतीकों का उपयोग नई कविता की तरह अमूर्तता और बहुअर्थी संकेतों को गढ़ता है।

इस कविता में अनामिका की भाषा सहज, सजीव और लोक-प्रसूत है। वे शास्त्रीय बिंबों के साथ-साथ घरेलू, ग्रामीण प्रतीकों का भी उपयोग करती हैं। "टोकरी में दिगंत" जैसा शीर्षक ही एक सुंदर विरोधाभास को सामने लाता है - एक सीमित वस्तु में असीम का समावेश।

भाषा का संश्लेषण: आधुनिक हिंदी कविता की तरह यहाँ खड़ी बोली में गंभीर विचार हैं, परंतु प्राचीन शब्दावली (जैसे 'थेरी', 'संघ') का समावेश इसे एक विशिष्ट लय देता है। यह दुष्यंत कुमार की राजनीतिक प्रतिबद्धता और मंगलेश डबराल की लोक-संवेदना के बीच का सेतु लगता है।

नारीवादी दृष्टिकोण:

स्त्री की आवाज़ का विस्तार: थेरीगाथा स्त्री-अनुभवों का प्रथम साहित्यिक दस्तावेज़ है। इस संग्रह में यह आवाज़ आधुनिक स्त्रीवादी चिंताओं (जैसे देह-राजनीति, पहचान की तलाश) से जुड़ती है। मीरा कांडपाल या अनामिका की कविताओं की तरह, यहाँ स्त्री-शरीर और मन का विद्रोह भी दिखता है।

उदाहरण: "टोकरी में बंद आकाश / अब सीमाओं को चीरकर / स्त्री की आँखों में उगता है" - यह पंक्तियाँ आधुनिक स्त्री की सीमाओं को तोड़ने की छटपटाहट को दर्शाती हैं।

आध्यात्मिकता बनाम भौतिकता:

मोक्ष से आधुनिक मुक्ति तक: प्राचीन काल में मोक्ष जीवन का लक्ष्य था, जबकि आधुनिक कविता भौतिक जीवन की जटिलताओं (नगरीय अकेलापन, पर्यावरणीय संकट) को अभिव्यक्त करती है। इस संग्रह में दोनों का समन्वय है - "टोकरी" भौतिक बंधनों का प्रतीक है, और 'दिगंत' उसकी मानसिक मुक्ति की इच्छा।

तुलना: कुँवर नारायण की 'आत्मजयी' की तरह, यहाँ भी आध्यात्मिक यात्रा को व्यक्ति-समाज के संघर्ष से जोड़ा गया है।

नवाचार और सीमाएँ:

पुराने को नया स्वर: थेरीगाथा के मूल तत्वों को डिजिटल युग की भाषा (जैसे 'स्क्रॉल', 'फ़िल्टर') से जोड़ना इसकी विशेषता है। हालाँकि, कहीं-कहीं प्रतीकों का अति-प्रयोग अर्थ को धुंधला कर देता है।

आधुनिक कविता से अलगाव: यह संग्रह इतिहास और समकाल के बीच खड़ा है, परंतु कभी-कभी यह दोनों के बीच संतुलन खो देता है, जैसे अचानक निराला की क्रांतिकारी भाषा से हटकर शास्त्रीयता में लौट आना।

निष्कर्ष:

"टोकरी में दिगंत: थेरीगाथा" हिंदी साहित्य में एक साहसिक प्रयोग है, जो प्राचीनता और आधुनिकता के बीच संवाद स्थापित करता है। यह न केवल थेरीगाथा की स्त्री-केंद्रित दृष्टि को पुनर्जीवित करता है, बल्कि आधुनिक कविता के प्रयोगधर्मी स्वरूप को भी समृद्ध करता है। जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' या 'संसद से सड़क तक' की तरह, यह रचना भी हिंदी काव्य को नए आयाम देने की कोशिश करती है, हालाँकि कुछ जगहों पर यह प्रयास अधूरा लग सकता है। फिर भी, यह संग्रह हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण पड़ाव की ओर इशारा करता है।

चित्र काव्य प्रतियोगिता का चित्र

प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए इस चित्र के भावों को व्यक्त करने वाली कविता अधिकतम 50 शब्दों में लिखें और हमें BOI.Vaarta@bankofindia.co.in पर ईमेल द्वारा भेजें। सर्वश्रेष्ठ कविता के रचियता का फोटो, कविता के साथ अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। पुरस्कार राशि रु. 1000/- है। इस प्रतियोगिता में केवल बैंक ऑफ इंडिया के स्टाफ सदस्य ही भाग ले सकते हैं। कृपया नोट करें कि 50 से अधिक शब्द होने पर प्रविष्टि को पुरस्कार हेतु पात्र नहीं माना जाएगा।

दिसंबर 2024 अंक के चित्र काव्य प्रतियोगिता के विजेता

"माँ ही है संसार"

माँ की गोद में सपना पलता,
हाथों पर धरा का भार संभलता,
स्नेहिल स्पर्श, ममता का प्यार,
उसके आँचल में बसा है संसार,
शिशु मुस्काए, भविष्य चमकाए,
माँ की ममता धरती को हर्षाए,
सृष्टि का आधार है यह शक्ति,
मातृत्व है जीवन की सच्ची भक्ति।

दीपिका गौड़
ग्राहक सेवा सहायक
टिमरनी शाखा
खंडवा अंचल

उक्त चित्र काव्य प्रतियोगिता के लिए कुल 54 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई।
संपादकीय टीम सहभागिता करने वाले सभी स्टाफ सदस्यों के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए, आभार व्यक्त करती है।

राजभाषा विभाग का स्वर्ण जयंती वर्ष एवं प्रधान कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 200वीं बैठक का आयोजन

दिनांक 10.02.2025 को स्टार हाउस-2, बीकेसी मुंबई के 9वीं मंजिल पर स्थित सम्मेलन कक्ष में प्रधान कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 200वीं बैठक का आयोजन किया गया। इस दौरान बैंक की त्रैमासिक गृह पत्रिका 'तारांगण' के दिसंबर 2024 अंक का विमोचन माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री रजनीश कर्नाटक जी द्वारा किया गया। बैठक में तिमाही हिन्दी ईमेल प्रतियोगिता के विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक श्री सुब्रत कुमार और श्री राजीव मिश्रा, मुख्य महाप्रबंधकगण और महाप्रबंधकगण उपस्थित रहें।

इस ऐतिहासिक बैठक तथा बैंक के राजभाषा विभाग के स्वर्ण जयंती वर्ष के शुभ अवसर पर स्टार हाउस-2, बीकेसी मुंबई के 7वीं मंजिल पर स्थित कावेरी सभाकक्ष में हिंदी पुस्तकालय में ई-पुस्तकालय का उद्घाटन माननीय प्रबंध निदेशक एवं सीईओ श्री रजनीश कर्नाटक जी द्वारा किया गया एवं इस दौरान 'राजभाषा कार्यशाला सहायिका' के संशोधित संस्करण का विमोचन भी प्रबंध निदेशक एवं सीईओ महोदय द्वारा किया गया:

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, जयपुर में पुरस्कार वितरण

रत्नागिरी आंचलिक कार्यालय

गोवा आंचलिक कार्यालय

रत्नागिरी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

नोएडा (बैंक) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, गुवाहाटी में पुरस्कार वितरण

कोलकाता आंचलिक कार्यालय

रांची आंचलिक कार्यालय

गुवाहाटी आंचलिक कार्यालय

अन्य गतिविधियां

दिनांक 17.02.2025 को चेन्नई आंचलिक कार्यालय का डीएफएस के उपनिदेशक (राजभाषा) श्री धर्मबीर द्वारा राजभाषा विषयक निरीक्षण किया गया।

प्रधान कार्यालय में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर सहायक महाप्रबंधको के लिए हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में रिजर्व बैंक के महाप्रबंधक श्री अरविंद कुमार चतुर्वेदी ने सत्र लेकर सभी कार्यपालकों का मार्गदर्शन किया।

बैंक ऑफ इंडिया आंचलिक कार्यालय रत्नागिरी में नवीकृत पुस्तकालय का उद्घाटन मुख्य महाप्रबंधक श्री प्रमोद कुमार द्विवेदी, एफजीएमओ पुणे के कर कमलों से किया। साथ में आंचलिक प्रबंधक श्री नरेंद्र रघुनाथ देवरे तथा उप आंचलिक प्रबंधक श्री अंजनी कुमार सिंह आज़ाद ।

बैंक में विश्व हिंदी दिवस 2025 का आयोजन

एसटीसी नोएडा

अहमदाबाद अंचल

नागपुर अंचल

अमृतसर अंचल

बर्धमान अंचल

बारिपदा अंचल

भागलपुर अंचल

बोकारो अंचल

देहरादून अंचल

धनबाद अंचल

गोवा अंचल

गया अंचल

जोधपुर अंचल

गुवाहाटी अंचल

एफजीएमओ लखनऊ

लखनऊ अंचल

जबलपुर अंचल

पटना अंचल

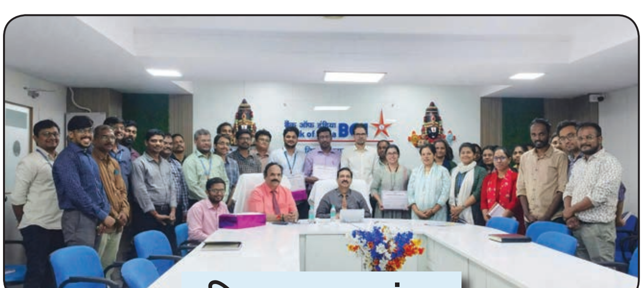

विशाखापट्टनम अंचल

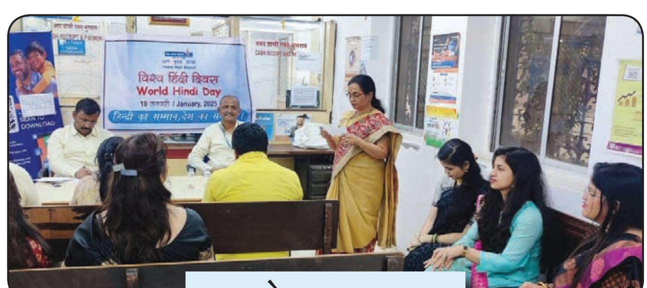

ठाणे मुख्य शाखा

केन्दुझर अंचल

कोलकाता अंचल

नवी मुंबई अंचल

हावड़ा अंचल

गांधीनगर अंचल

रायगढ़ अंचल

जमशेदपुर अंचल

कानपुर अंचल

रायपुर अंचल

सिवान अंचल

सूरत अंचल

वडोदरा अंचल

विजयवाड़ा अंचल

मदुरै अंचल

नासिक अंचल

इंदौर अंचल

संबलपुर अंचल

मुजफ्फरपुर अंचल

तिरुवनंतपुरम अंचल

कोल्हापुर अंचल

जब आप फेमप्रेन्योर बन सकते हैं
तो उद्यमी क्यों?
बीओआई
बीओआई
उद्यमी
वनीता
महिलाओं के नेतृत्व वाले एमएसएमई के विकास को बढ़ावा देने के लिए विशेष उत्पाद
ब्याज दर 9.60% से शुरू (आरबीएलआर+0.25%)
संपार्श्विक ऋण पर 0.25% की अतिरिक्त रियायत
ऋण राशि ₹10 लाख से ₹10 करोड़ तक
संपार्श्विक मुक्त (₹5 करोड़ तक)
समर्पित महिला आरएसएम, नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच, मर्चेंट क्यूआर कोड, नेट और मोबाइल बैंकिंग
एमएसएमई यंगप्रिन्योर क्लब की सदस्यता
बैंक ऑफ़ इंडिया
रिश्तों की जमापूँजी
टोल फ्री नं.: 1800 220 229 / 1800 103 1906 | देखें : www.bankofindia.co.in | पर फॉलो करें

अपने वित्तीय भविष्य
को सशक्त बनाए
बीओआई
बीओआई
नारी शक्ति
बचत खाते
के संग
विशेष लाभ और रियायतें :
• व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा कवर
• महिला केंद्रित स्वास्थ्य और कल्याण सुविधाएं
• लॉकर किराये पर छूट
• खुदरा ऋण पर ब्याज एवं प्रसंस्करण शुल्क में रियायत
• उच्च उपयोग सीमा के साथ डेबिट एवं क्रेडिट कार्ड की सुविधा (निशुल्क बीमा के साथ)
• डीमेट खाते के एएमसी शुल्क में रियायत
• मुफ्त चेक पत्रे एवं NEFT /RTGS शुल्क में रियायत
बैंक ऑफ़ इंडिया
रिश्तों की जमापूँजी
टोल फ्री नं.: 1800 220 229 / 1800 103 1906 | विजिट करें : www.bankofindia.co.in | पर हमें फॉलो करें.

सपनों की उड़ान

अब ना रुकेंगी ये बेटियाँ, ना झुकेंगी अब निगाहें,
सपनों की उड़ान लिए, वो खुद चुनेंगी अपनी राहें।

भारती प्रवीण कडु
प्रबंधक
गुलमोहर कॉलोनी शाखा
भोपाल अंचल